*(तर्ज : आधा है चन्द्रमा...)*

आओ गणेश म्हारे घरां आओ जी
मूसक सवार होके बेगा आओ जी,
म्हारे घरां आओ जी ।। टेर ।।

सबसे पहल्यां म्हें थाने मनावां,
ऊंचे आसन पर थाने बिठावां,
चंदन टीको करां, श्रीफल भेंट धरां-२
आके लडूवन का भोग लगाओ जी ।। १ ।।

भोले बाबा के सागे थे आओ,
मैया गोरां ने भी सागे ल्याओ,
लक्ष्मी मैया समेत, लाभ-शुभ और कुबेर-२,
रिद्धि-सिद्धि ने सागे थे ल्याओ जी ।। २ ।।

श्याम बाबा को किर्तन करायो,
थाने न्यूतो म्हें आज भिजायों,
''हर्ष'' किरपा करो, सगला विघ्न हरो-२,
आके किर्तन ने सफल बणावो जी ।। ३ ।।





*(तर्ज : नदिया बहे बहे रे धारा...)*

गोरी सुत गणराज पधारो, आके सारे काज संवारो ऽऽऽ
तुझको आना होगा, तुझको आना होगा ।। टेर ।।

सारे देवो में पहले तुझको मनायें,
तुही दयालु सारे विघ्न हटाये,
गिरजा के प्यारे बाबा शिव के दुलारे, ऽऽऽ-२,
दुखड़ों से आके देवा हमको उबारो ।। १ ।।

रिद्धि सिद्धि के दाता आप कुहायें,
किरपा दिखाओ देवा गुण तेरे गायें,
भगतों की नैया अब है तेरे सहारे ऽऽऽ-२,
अटकी कश्ति को आके पार उतारो ।। २ ।।

मलयागिरी चंदन का टीका लगाऊँ,
लडुअन का देवा तेरे भोग लगाऊँ,
''हर्ष'' दिवाना तेरी बाट निहारे, ऽऽऽ-२,
मेरे भी अटके सारे काज सुधारो ।। ३ ।।

## श्री गणेश वन्दना

*(तर्ज : तुझे माने है भरत सम भाई...)*

रिद्ध सिद्ध का देव निराला, शिव पार्वती का लाला,
सदा ही कल्याण करता,
मेरा देव है मंगल कारी, सभी के भण्डार भरता ।। टेर ।।

शिव का दुलारा है ये गोरां माहतारी है,
गज सा बदन तेरा मूसे की सवारी है,
चढ़े पान फूल फल मेवा, सारे संत करे तेरी सेवा,
सभी का तुही मान रखता ।। १ ।।

दुन्द दुन्दाला है ये सुण्ड सुण्डाला है,
भगतों का मंगल करने वाला है,
इसे दिल से जो भी बुलाता, पल भर में दौड़ा आता,
सफल सारे काम करता ।। २ ।।

''हर्ष'' कहे रे पहले इसको मनाले,
चरणों में इसके तु शीश झुका ले,
सारे विघ्न हटादे तेरे, सारे काम बनादे तेरे,
दीनों के दुख दूर करता ।। ३ ।।



## श्री गुरुदेव वन्दना

*(तर्ज : बहारों फूल बरसाओ...)*

गुरु चरणों में झुक जाओ, ''प्रभु का ये ठिकाना है''-२,
गुरु भगती में रम जाओ, ''प्रभु का ये ठिकाना है''-२ ।।

ओ बन्दे नाम की महिमा, बड़ी भारी है गुरुवर की,
शीतल हो जायेगा मनवा, जैसे छैंया हो तरुवर की,
गुरु किरपा को तुम पाओ, ''प्रभु का ये ठिकाना है''-२ ।। १ ।।

क्या भला साथ तू लाया, क्या तुझे लेके जाना है,
तेरी काया तो है माटी, माटी के बीच जाना है,
गुरु महिमा को तुम गाओ, ''प्रभु का ये ठिकाना है''-२ ।। २ ।।

जला ले प्रीत का दीपक, सूनी अंधियारी रातों में,
कहीं ऐ ''हर्ष'' ये जीवन, बीते ना यूँ ही बातों में,
गुरु का ज्ञान तुम पाओ, ''प्रभु का ये ठिकाना है''-२ ।। ३ ।।

*(राग रचयिता : बालकिशन शर्मा)*

जय जय वैद्यनाथ स्वामी, जय जय भूतनाथ स्वामी,
नाम अनेकों, धाम अनेकों, तुम हो अन्तर्यामी ।। टेर ।।

सोमनाथ, अमरनाथ, गोरी प्राणेश्वर,
भीमाशंकर, घुस्मेश्वर, महाकालेश्वर,
भोलेनाथ - भोलेनाथ, भोलेनाथ - भोलेनाथ ।। १ ।।

कामनाथ, बाबुलनाथ, त्रम्बकेश्वर,
विश्वनाथ, बासुकीनाथ, भोले सिद्धेश्वर,
भोलेनाथ- भोलेनाथ, भोलेनाथ, भोलेनाथ ।। २ ।।

भोलेनाथ, केदारनाथ, ओंकारेश्वर,
मल्लिकार्जुन, नागेसम, बाबा रामेश्वर,
भोलेनाथ - भोलेनाथ, भोलेनाथ - भोलेनाथ ।। ३ ।।

पशुपतिनाथ बाबा, दुखड़े तु हर,
''हर्ष'' शरण आया, दया के सागर,
भोलेनाथ - भोलेनाथ, भोलेनाथ - भोलेनाथ ।। ४ ।।





*(तर्ज : मेरे पैरों में घुंघरु...)*

डमरुवाले के काँवड़ चढ़ा दे, तो भोले का कमाल देख ले,
कोई दूध से इनको नहलादे, हो जाये माला-माल देख ले ।।

ओघड़दानी शंकर शंभु, गांजे की धुन में रहता,
आक-धतुरा खाने वाला, भक्तों के दिल में रहता,
मेरा बाबा बिल्कुल है भोला, ''खाये ये हरदम भांग का गोला''-२,
कोई थोड़ी सी भंगिया पिलादे, हो जायेगा निहाल देख ले ।।

तीन लोक का पालन हारा, रखता नजर है सब पे,
भक्तों को हरपल आते देखे, कांधे पे कांवड़ा ले के,
जब भी कोई काँवड़ ले आये, ''बाबा जी उसको दिल में बिठाये''-२,
शिवलिंग पे जो जल को चढ़ाये, हो जाये बेड़ा पार देख ले ।।

नर-नारी भोले के दर पे, पैदल चल कर जाये,
पांवों में पड़ते छाले उनके, फिर भी ना रूकना चाहे,
रस्ता इनका बहुत कठिन है, ''''हर्ष'' तो चलना बड़ा मुश्किल है''-२,
कोई बाबा को दिल से बुलाये, हो जायेगा वो पार देखले ।।

*(राग रचयिता : बालकिशन शर्मा -मो॰ ९८३१०९६२१३)*

भज मन सुबह -शाम, शिव शिव राम राम,
शिव शिव राम राम, शिव शिव राम राम ।। टेर ।।

विधना का लेख टाले बाबा त्रिपुरारी,
ऐसे हैं दातार मेरे भोले भण्डारी ।। १ ।।

लगाके समाधी बैठे भोले बाबा ध्यान में,
राम नाम मंत्र गूँजे घड़ी घड़ी कान में ।। २ ।।

रामजी को पाना है तो शिव को मनावो,
शिव-शिव रटके बन्दे राम को रिझावो ।। ३ ।।

देवों की खातिर पिया जहर का प्याला,
बड़ा ही दयालु ''हर्ष'' बाबा डमरू वाला ।। ४ ।।





*(तर्ज : जब कोई नहीं आता मेरी मैया आती है ...)*

भोले शंकर दानी, तू जग का विधाता है,
अपने भगतों का तू, बस दीन-दाता है ।। टेर ।।

जब दुनिया सोती है, तब तू ही जगता है,
जग का पालन पोषण, बम भोला करता है,
भगतों के कष्टों को, तू दूर भगाता है ।।
अपने भगतों... ।। १ ।।

कोई दूध से नहलाये, जल कोई चढ़ा जाये,
कोई उख का रस सींचे, कोई भंग पिला जाये,
कोई आक धतूरे का, तुझे भोग लगाता है ।।
अपने भगतों... ।। २ ।।

किस्मत ही बदल डाले, जो नाम जपे तेरा,
आफत से तू टाले, जो ध्यान धरे तेरा,
चरणों में ''हर्ष'' तेरे, ये शीश झुकाता है ।।
अपने भगतों... ।। ३ ।।

*(तर्ज : कसमें वादे प्यार वफा...)*

शंकर से बोले यूं गोरा, क्या ये स्वांग रचाया है,
तीनलोक के दाता होकर, साधू वेष बनाया है ।। टेर ।।

बैठे रहते धूनी लगाये, भस्मी तन पे रमाते हो,
आक धतूरा सेवन करते, भंग का भोग लगाते हो,
भूतों से करते तुम यारी, कैसी तुम्हारी माया है ।। १ ।।

धरती पर बैठे रहते हो, ऊंचे सिंहासन अधिकारी,
महलों के बदले करते हो, कुटिया वास हे त्रिपुरारी,
तीनलोक की रानी को भी, तुमने आज लजाया है ।। २ ।।

गौरा जी की सुनकर बातें, बोले हंस कर भोला जी,
अच्छा खाये दुनिया मेरी, मैं तो भंग का गोला जी,
संतो को जग के लिए छोड़ा, भूतों को अपनाया है ।। ३ ।।

ऊंचे सिंहासन वालों को तो, हरदम ही गिरते देखा,
''हर्ष'' जमीं पर जो मैं बैठूं, गिरने का फिर डर कैसा,
इसी लिए धरती पर मैने, आसन मेरा बिछाया है ।। ४ ।।





*(तर्ज : हे दुख भंजन मारुती नन्दन सुनलो...)*

हे शिव शम्भु, करुणा सिन्धु, जग के पालनहार
दयालु, वंदन बारम्बार -२ ।। टेर ।।

त्रिलोकी है नाम तिहारा, तेरी दया से जग उजियारा,
कण कण में है वास तुम्हारा, करुणा के भण्डार,
दयालु, वंदन बारम्बार-२... ।। १ ।।

सारे जग के तुम हो स्वामी, हे जग पालक अन्तर्यामी,
सियाराम का ध्यान धरे तू, गिरिजा के भरतार,
दयालु, वंदन बारम्बार-२... ।। २ ।।

''हर्ष'' कहुँ क्या तेरी माया, तूने ये ब्रह्माण्ड रचाया,
तेरे नाम से हम दीनों का, चलता है संसार,
दयालु, वंदन बारम्बार-२... ।। ३ ।।

*(राग रचयिता : राजेश चतुर्वेदी मो॰ ९८३००९४१३६)*

अरे रंगरेजा रंग दे, चुनरिया रंग दे रे,
मेरी दादी जी की एक चुनरिया रंग दे रे ।। टेर ।।

ओढ़ जिसे माँ लागे, प्यारी सी दुल्हनियाँ,
देखे उसी को भाये, दादी की चुनरिया,
काम बड़ा है नेक चुनरिया रंग दे रे... ।। १ ।।

आँखे हटे ना जिससे, ऐसी हो चुनरिया,
देखते ही बीते जिसे, सारी ये उमरिया,
चम चम चमके तेज चुनरिया रंग दे रे... ।। २ ।।

रंग दे चुनरिया प्यारी, गुण तेरे गायेगें,
भावों से सजाके ''हर्ष'', दादी को उढ़ायेगें,
खर्च का ना परहेज चुनरिया रंग दे रे... ।। ३ ।।





*(तर्ज : आ लौट के आजा...)*

आया आया हे भवानी थारा लाल,
भगत थाने फाग खिलासी ऐ,
देखो माची है होली की धमाल,
भगत थाने फाग खिलासी ऐ ।। टेर ।।

सर सर चाले हवा बसन्ती, फागण की रूत आई,
चंग मजीरा बाजण लाग्या, नाचे लोग लुगाई,
नाचे नाचे माँ घूमर घाल, भगत थाने फाग खिलासी ऐ ।। १ ।।

केशरिया रंगा में थारी, चुनड़ी म्हे रंग देस्याँ,
दादी थारो रंग बिरंगो, मंदरियो कर देस्याँ,
सागे ल्याया म्हे रंग गुलाल, भगत थाने फाग खिलासी ऐ ।। २ ।।

कइयाँ आवाँ मंदरिये में, म्हाने ''हर्ष'' बताओ,
सिहँ खड़्यो है रस्तो रोक्याँ, थे ही बाहर आओ,
आके करद्यो माँ म्हाने निहाल, भगत थाने फाग खिलासी ऐ ।। ३ ।।

*(तर्ज : गूंजे गूंजे रे मैया...)*

आयो आयो है दादी को उत्सव आज,
के नाचे-गावे टाबरिया, टाबरिया ए दादी टाबरिया ।। टेर ।।

सगला मिलके बधाई गावे, दादी जी थारा लाड़ लड़ावे,
थारो खूब सज्यो है सिणगार, के नाचे गावे टाबरिया...।।

छप्पन भोग रा थाल सजाया, बुंदिया भुजिया का भोग लगाया,
जीमो-जीमो थे म्हारे घरां आज, के नाचे-गावे टाबरिया...।।

घणा दिनां सूं थी मन में म्हारे, कद आवेली दादी घर म्हारे,
आज सुपणो हुयो साकार, के नाचे-गावे टाबरिया...।।

ढोलक झांझ मजीरा बाजे, दादी थारा सेवक जमके नाचे,
''हर्ष'' सुध बुध दीन्ही बिसार, के नाचे-गावे टाबरिया...।।





*(तर्ज : ओ बाबुल प्यारे...)*

ओ ढ़ांढण वाली sss, तुझे निशदिन ध्याऊँ दादी,
तेरी महिमा गाऊँ दादी, तेरी किरपा चाहुँ दादी, ओ sss ।।

तेरी दया से चलता गुजारा, तेरा दिया ही मैं खाऊँ, ओsss
तेरे ही दम पे माँ टीडा गैला, मैं अपना जीवन चलाऊँ,
तुही सुनती मेरी बात, तुही रखती मेरी लाज
तेरी किरपा कभी ना हो कम..।। १ ।।

तेरे भरोसे ही मेरा भवानी चलता है दाना पानी,
तेरी ही सेवा में बीते अबतो, बेटे की ये जिन्दगानी,
पाऊँ हर पल तेरा साथ, रखना मेरे सिर पे हाथ,
तेरे बच्चे पे करना रहम..।। २ ।।

''हर्ष'' दिवाना अरज गुजारे, मुझको भी ढ़ांढण बुलाले,
आँचल की छाया देदे भवानी, चरणों में अपने बिठाले,
तेरे बेटे का कहना, तेरी सेवा में रहना,
तेरी चौखट पे निकले ये दम..।। ३ ।।

*(तर्ज : लग रही सोणी सोणी...)*

इस पर भी तो छोड़ो, कुछ इस पर भी तो छोड़ो,
तु एक अकेला क्या कर लेगा, इस पर भी तो छोड़ो ।। टेर ।।

इसकी किरपा से ही तेरा चलता दाना पानी,
बड़े मजे से कट जायेगी तेरी ये जिन्दगानी,
इसकी मरजी पर छोड़ो, इसकी मरजी पर छोड़ो ।। १ ।।

खूंटी तान के सोना प्यारे बिन ताले बिन ताली,
तेरे कारोबार की चिन्ता करेगी झुंझुणुवाली,
दादी से नाता जोड़ों, दादी से नाता जोड़ो ।। २ ।।

मैं और मेरे के चक्कर से खुद को जरा निकालो,
''हर्ष'' कहे सब छोड़ के इसपे भगतों मौज उड़ालो,
झूठे अभिमान को तोड़ो, झूठे अभिमान को तोड़ो ।। ३ ।।





*(तर्ज :थारे झाँझ नगाड़ा...)*

काबा मंदरिये में नाचे रे,
देशनोक में करणी माँ को डंको बाजे रे ।। टेर ।।

देशाणे री राया थारो मंदिर बड़ो विशाल,
आसोजा में मेलो लागे मैया को हर साल,
सेवक चौदस रात्युँ जागे रे ।। १ ।।

मकराणे रे देवरे पर ध्वाजा फरूखे लाल,
नौबत बाजे द्वार पे जी सेवक करे धमाल,
थारे छत्तर हजारां साजे रे ।। २ ।।

गंगाजल सो पावन भगतों देपासर रो नीर,
भगतां रा यो पाप मिटावे हर लेवे है पीड़,
दुखड़ा दरसण करतां भागे रे ।। ३ ।।

चारण कुल री कुलदेवी रो ''हर्ष'' करे गुणगान,
करणा दे रे चरणां माही बारम्बार प्रणाम,
माँ को रूप सलूणों लागे रे ।। ४ ।।

*(गजरा, पैरोडी)*

*(धमाल)*

ओ बेगो बणवादे मालीड़ा माँ को प्यारो गजरो,
नीन्दड़ली सुं जाग बावला कइयाँ पसर्‌यो ।। टेर ।।

भांत भांत का फुलड़ा ल्याजे चुन चुन के तु बागां सुं,
मनचाया तने दाम मैं देस्युँ छोड़ तेरो नखरो ।। १ ।।

गूंथ गूंथ के कलियाँ माँ को हार बणादे सोणो सो,
दादी जी के गजरे ताईं कइयाँ मुकर्‌यो ।। २ ।।

*(बाई सा रा बीरा)*

मालीड़ा प्यारा मतना तु देर लगा,
म्हारी दादी जी को तु प्यारो सो हार बणा ।। टेर ।।

म्हे दादी जी ने आज पहरास्याँ जी,
म्हारी दादी जी ने तु बनड़ी सी आज बणा ।। १ ।।

चम्पा जुही की कलियाँ सजादे रे,
कोई आज मोगरे ने गजरे के माही गुथां ।। २ ।।





*(पणिहारी)*

सोणो सुरंगो मावड़ी थारो गजरो ल्याया आज,
आज पहरास्याँ ऐ भवानी थाने चाव सुं ।। टेर ।।

पहरो पहरो थे म्हारी मावड़ी थारा सेवक निरखे आज,
आज पहरास्याँ ऐ भवानी थाने चाव सुं ।। १ ।।

बेटा गुजारे थासुँ वीनती ओ दादी राखो म्हारी लाज,
आज पहरास्याँ ए भवानी थाने चाव सुं ।। २ ।।

*(मोरिया )*

मावड़ी, गजरो ल्याया म्हे थारो जोर को,
पहरो पहरो ऐ -२, भवानी थारा लाल उडीके,
गजरो ल्याया म्हे थारो जोर को ।। टेर ।।

मावड़ी, गजरो पहरास्याँ थाने भाव सुं,
राखो राखो ऐ–२, भगतां को दादी मान जरा सो,
गजरो ल्याया म्हे थारो जोर को ।। १ ।।

मावड़ी, चम्पा चमेली मरवो मोगरो,
ल्याया ल्याया ऐ-२, गजरे के माहीं गूथं मावड़ी,
गजरो ल्याया म्हे थारो जोर को ।। २ ।।

*(दादी ऐ थारी ज्योत सवाई)*

दादी जी थारो गजरो ल्याया जी,
कोई पहरो म्हारी माय भगत थासुं अरज लगाया जी ।।

ईं गजरे में भाव भर्‌या है बेगा पहरो माँ, भवानी,
टाबरियां को मान राखद्‌यो नाटो थे मतना,
दादी जी घणी आस लगाया जी ।। १ ।।

चान्दी चौकी बैठ के दादी लागो महाराणी, मावड़ी,
गजरो पहर्‌यां पाछे लागो मोटी सेठाणी,
दादी जी म्हारी आस पुराया जी ।। २ ।।

*(पल्लो लटके)*

सोणी लागे भवानी, सोणी लागे,
कि बैठी, गजरो पहर्‌याँ आज भवानी सोणी लागे ।।

कर सोलह सिणगार मावड़ी किर्तन माहीं आई,
बेटा पोता हार पिहरायो सैंको मान बढ़ाई,
कि बैठी.... ।। १ ।।

''हर्ष'' मावड़ी थाने निरखां निरख निरख सुख पावां,
सालुंसाल थे आता रहिज्यो याही अरज लगावां,
कि बैठी... ।। २ ।।





*(तर्ज : हर हर महादेव...)*

जय भवानी, जय भवानी, जय भवानी, जय भवानी ।
जय जय दुर्गे माँ, जय जय काली माँ ।।

महिषासुर के नाश को, दुष्टों के विनाश को,
बनके वो चण्डी चली, दुर्गे भवानी चली,
जय जय दुर्गे माँ, जय जय काली माँ ।। टेर ।।

चण्डी रूप धरा जननी ने, दानव थर थर कांप रहे,
माता की गर्जन सुन करके, धरती अंबर हांफ रहे,
दानव दल को मार न लेगी, तब तक ना विश्राम करे,
वंश मिटा डालेगी उनके, क्षण भर ना आराम करे,
शेर पे मां हो सवार, दुष्टों का करने संहार,
चामुण्डा पर्वत चली, दुर्गे भवानी चली,
जय जय दुर्गे माँ, जय जय काली माँ ।। १ ।।

## (२)

जंगल के राजा ने पकड़ा, भैंसे को आक्रोश में,
महा भयंकर समर छिड़ गया, पर्वत की आगोश में,
चीरके महिषासुर की छाती, चिघांड़ी फिर जोश में,
वंश मिटा डाला दानव का, और रही ना होश में,
दानवों का बनके काल, बन गई माता विकराल,
रोके से फिर ना रूकी, दुर्गे भवानी चली,
जय जय दुर्गे माँ, जय जय काली माँ ।। २ ।।

महिषासुर का वध करके भी, क्रोध न माँ का शांत हुआ,
जो भी उनके सामने आया, पल में उसका अंत हुआ,
भोले शंकर से जा करके, देवों ने वृतान्त कहा,
रस्ते में वो लेट गये और, गुस्सा माँ का शांत हुआ ,
पैर सीने पर पड़ा, ''हर्ष'' रंग काला हुआ,
मुख से फिर जीभ निकली, अंबे माँ काली बनी,
जय जय दुर्गे माँ, जय जय काली माँ ।। ३ ।।





*(तर्ज : खाना खाके जाना...)*

झूझँनू बिराजे राणी सती माँ हमारी,
सारा जग जाने मां की महिमा है भारी,
दर्शन मैया का जरूर करने जाना,
धोक लगाके आना भगतों धोक लगाके आना ।। टेर ।।

मैया से बड़ा ना इस दुनिया में दूजा,
सारे देवी देवता करते है माँ की पूजा,
जो भी मां के द्वारे आया बन गया दीवाना ।। १ ।।

दानवों का माताराणी करती संहार है,
भक्तों का पल में ये भरे भंडार है,
बिगड़ी बनानी है तो दौड़े चले जाना ।। २ ।।

बिना मांगे देती है माँ ऐसी दिलदार है,
रिद्धि-सिद्धि धन के लगाये अम्बार है,
''हर्ष'' से पूछ ले तू मैया का ठिकाना ।। ३ ।।

*(तर्ज : लग रही सोणी सोणी...)*

तेरा चूड़ा खन खन खनके तेरी पायल छन छन छनके
तेरी लाल चुनरिया में मैया हीरे मोती दमके ।। टेर ।।

तेरे हार गले में सोहे माथे पे साजे बिंदिया,
देख के तेरा रूप सलोना उड़ गई मेरी निंदिया,
रूप तुम्हारा देख भवानी चन्दा भी शरमाये,
तेरा उत्सव आया रे तेरे सेवक नाचे जम के ।। १ ।।

कानों मे कुण्डल प्यारे नथली की शोभा भारी,
माँ पल पल तुझे निहारूँ तुझपे मैं जाऊँ वारी,
नवरातों में आज भवानी घर मे मेरे आई,
सिंगार सजाया रे तेरा आज भवानी हटके ।। २ ।।

माँ इतनी सोणी सोणी तुझे नजर कहीं ना लागे,
ये चान्द सितारे फीके माँ आज तुम्हारे आगे,
''हर्ष'' दिवाना आज तुझे माँ देख देख इतराये,
ये तेज निराला रे तेरे मुखड़े पे माँ चमके ।। ३ ।।





*(धमाल)*

दादी नाचण दे तेरे भगतां ने तेरो खूब सज्यो सिणगार,
कीर्तन मांही आज छा गई बागां की बहार ।। टेर ।।

रंग बिरंगा गजरां सुं सिणगार सज्यो है प्यारो जी,
सुरंगा सुं भी न्यारो लागे यो तेरो दरबार ।।१।।

देख देख सिणगार भवानी भगतां रो मन हरषे जी,
टाबरिया थारा आज्य खड़्या है नाचण ने तैयार ।।२।।

ठुमक ठुमक कर नाचां दादी थाने आज रिझास्याँ जी,
ताल सुं ताल मिलासी म्हारे घुंघरू की झणकार ।।३।।

''हर्ष'' कहवे माँ टाबरियां ने मतना रोको टोको जी,
आज भवानी झूम के नाचां भूल के म्हे घर बार ।।४।।

*(तर्ज :बाबासारी लाडली...)*

देशनोक री राया ने जो मन सूं ध्यावे जी,
भगतां रा माँ आके सगला काम बणावे जी ।। टेर ।।

बीच समन्दर जगडु शाह को बेड़ो मैया तारी जी,
रूप बासिका धर कूँअे सूं अणदे ने माँ उबारी जी,
भगतां री आवाज पे मैया दौड़ी आवे जी ।। १ ।।

कैद में शेखो माँ ने ध्यायो बीकी कैद छुड़ाई रे,
जमपुर जाय जमी जगदम्बा लाखण सुत ने ल्याई रे,
साँचे मन सुं याद करे वो परचा पावे जी ।। २ ।।

कोप कर्यो जद कान्हे उपर सिंह होय माँ हाली जी,
किरपा करी रीड़मल उपर राज दियो प्रतिपाली जी,
भगतां री कर्नल किनियाणी आस पुरावे जी ।। ३ ।।

कुणसा कुणसा परचा थारा ''हर्ष'' भगत गिणवावे माँ,
महर करो थे म्हाँपर थारे चरणां शीश झुकावे माँ,
श्रद्धा सूं जो नाम जपे वो भगती पावे जी ।। ४ ।।





*(बीरा बेगा बेगा )*

बीरा भात भरण थे आइज्यो,
कोई लाल चून्दड़ी ल्याइज्यो जी ।। टेर ।।

बीरा भावज के संग आइज्यो,
नन्दलाल भतीजे ने ल्याइज्यो जी ।। १ ।।

बेटी नारायणी परणीजे,
आके सिरपे हाथ फिराइज्यो जी ।। २ ।।

बाई गंगा तिलक लगासी,
चढ़ पाटे भात भराइज्यो जी ।। ३ ।।

बीरा गाडा भर भर ल्याओ,
थे माल मोकलो ल्याइज्यो जी ।। ४ ।।

कह्वे ''हर्ष'' कुटुम्ब में म्हारे,
थे म्हारो मान बढ़ाइज्यो जी ।। ५ ।।

*(तर्ज : ओ पालन हारे...)*

भादो माँ बीता, आश्विन है आया,
मैया घर आजा नवरातों में,
बेटे ने तेरा , माँ किर्तन करवाया,
मैया घर आजा नवरातों में ।। टेर ।।

घर में तेरी माँ ज्योति जलाई,
तेरे बेटे को अब ना समाई,
अंतर छिड़काया, आंगन महकाया ।। १ ।।

तेरे चरणों को दाती पखारूँ,
तेरे मुखड़े को पल पल निहारूँ,
करूणा की सिन्धु, ममता की छाया ।। २ ।।

''हर्ष'' हलवे का भोग लगा जा,
मेरी सोई माँ किस्मत जगा जा,
आँचल की छाया, करदे महामाया ।। ३ ।।





*(तर्ज : लाल दुपट्टा उड़ गया रे...)*

माँ पहाड़ी आ गई रे देखो बड़े ही मोके से,
इक पल भी माँ रूक ना पाई किसी के रोके से,
भवानी मेरा ध्यान रखती है, भगत का मान रखती है ।।

इंतजार में बैठा था पहाड़ी माँ तेरे,
घर में आके मेट दिये संकट तु मेरे,
भाव की भूखी रह नही पाई किसी के रोके से ।। १ ।।

महक उठा ये आंगन माता तेरे आने से,
चहक उठा है मनवा मेरा मान बढ़ाने से,
माँ शेर तुम्हारा बातें करता हवा के झोंके से ।। २ ।।

जब जब याद किया मैने दौड़ी तु आई,
''हर्ष'' को दी आँचल छाया तूने ओ माई,
जब जब मेरे चैन को लूटा जग ने धोखे से ।। ३ ।।

## श्री दादीजी वन्दना

*(तर्ज : ऊँचे ऊँचे पर्वत लम्बा रस्ता..)*

म्हारी दादी जी के चालो दादी दया करसी,
झोली थारी माँ भगत भरसी भरसी ।। टेर ।।

देखो भादवे को मेलो लागे भारी जी,
करल्यो दादी जी के जाणे की थे त्यारी जी,
म्हारी मावड़ी के जाणो पड़सी पड़सी ।। १ ।।

म्हारी दादी जी के द्वारे जो भी जावेलो,
मौज दादी की दया सुं बो उड़ावेलो,
कइयाँ दादी जी ने भूल्याँ सरसी सरसी ।। २ ।।

''हर्ष'' दादी ने जो मनड़े सुं ध्यावे है,
बीने राणी सती परचो दिखावे है,
थारी अरजी पे ध्यान धरसी धरसी ।। ३ ।।



## श्री दुर्गाजी वन्दना

*(राग रचयिता : दामोदर शर्मा)*

मुझे पता चला है माँ, आज यहाँ आयेगी
चान्दी सोना हीरे मोती, धन बरसायेगी ।।

सब भगतों को बोल के रखना,
दरवाजों को खोल के रखना,
वैष्णो धाम से वैष्णो माता, चल कर आयेगी ।। १ ।।

माँ के चरणों में झुक जाना,
दिल का सारा हाल सुनाना,
बेटों की अटकी नैया को, पार लगायेगी ।। २ ।।

खुशियों से घर भर जायेगा,
जो चाहेगा वो पायेगा,
रहमत भरा खजाना मैया, आज लुटायेगी ।। ३ ।।

जिसके कर्म रहेगें जैसे,
फल देगी उसको माँ वैसे,
''हर्ष'' कहे भगतों को सच्चा, न्याय चुकायेगी ।। ४ ।।

*(धमाल)*

मेहन्दी मण्डवाले म्हारी दादी थारा सेवक आया ऐ,
चान्दी की प्याली में मैया घोल के ल्याया ऐ ।।

हाथां की हथेल्याँ मैया लाल सुरंगी रच देस्याँ,
घणी राचणी मेहन्दी हाथ रचावण आया ऐ ।।

*(बाई सां रा बीरा)*

म्हारी प्यारी मैया मेहन्दी मण्डाल्यो जी,
कोई सोणा सोणा माँ थारा हाथ रचाल्यो जी ।।

थे चान्दी चौकी बैठ मण्डाओ जी,
थारे टाबरियाँ को माँ थे मान बढ़ाओ जी ।।

*(पल्लो लटके)*

माण्डण आया भवानी माण्डण आया,
मण्डाल्यों हाथां माही बेटा पोता माण्डण आया ।।

हाथ मण्डाई कोन्या मांगे थासुं थारा लाल,
हाथ दया को सिर पे म्हारे धर दीज्यो थे आज ।।





*(पणिहारी)*

आओ भवानी घणे चाव सुं थारे मेहन्दी माण्डा आज,
हाथ बढ़ाओ माँ पुरादयो म्हारी आस जी ।।

पीडे पर बैठो म्हारी मावड़ी म्हारे आंगणिये मे आय,
मेहन्दी मण्डाल्यो माँ पुराद्यो म्हारी आस जी ।।

*(उमराव)*

थारी बाट जोतां आँखड़ल्या पथराई म्हारी माय,
सुध दास की लेल्यो म्हारी माँ ।।

माँ आज थारी ओल्युँ म्हाने आवे म्हारी माय,
थे देखल्यो आके म्हारी माय ।।

*(घूमर)*

ओ थारा बेटा बुलावे बेगा बेगा आओ माँ,
हाथ रचावाँ थारा मावड़ी ।।

ओ थारो ''हर्ष'' उडीके जोवे दादी थारी बाट,
मेहन्दी मण्डाओ म्हारी मावड़ी ।।

*(तर्ज : स्वर्ग से सुन्दर...)*

राणीसती माँ मुझे बुलाले इबकी तु दरबार,
मुझे तेरा धाम दिखादे, भगत की आस पुरादे ।। टेर ।।

तेरे भवन पे मैया, मैं भी तो आऊँ,
तेरे चरण की धूली, मैं भी तो पाऊँ,
आज तेरे बेटे को मैया दर्शन दे इकबार ।।१।।

कितनों को मैया तूने, दरपे बुलाया,
मैं हूँ अभागा जो ना, अब तक आया,
पूज रहा है तुझे भवानी ये सारा संसार ।।२।।

हाथ दया का तेरा, सिर पे माँ धरदे,
आस भगत की मैया, पूरी तू करदे,
''हर्ष'' भगत का मान बढ़ादे करना ना इन्कार ।।३।।





*(तर्ज : लाल लाल चुनड़ी में तारा चम चमके...)*

लाख जड़े हो चाहे हीरे मोती जमके
भावों वाली चुनरी ओढ़े, ''माता रानी हँसके''-२ ।। टेर ।।

भगतो धरके ध्यान सुनो साँची बात बताता हुँ,
माता के इक सेवक का किस्सा एक सुनाता हुँ,
निर्धन और लाचार बड़ा, करजे में था दबा पड़ा-२,
दुखड़ों की बदली छाई, ''सेवक के घर मे'' -२ ।। १ ।।

इक दिन माँ के मंदिर में प्यारा सा दरबार लगा,
ढ़ोल नगाड़े बजने लगे सुन्दर सा सिंगार सजा,
पावन बड़ा नजारा था, लगा हुआ भण्डारा था-२,
दर्शन को दुनिया आई ''माता के दर पे''-२ ।। २ ।।

माता के दरबार में वो निर्धन सेवक भी आया,
पैसा पाई जोड़ के वो माता की चुनड़ी लाया,
साँचे तार सितारों की, चुनड़ी चढ़ी हजारों की -२,
ओढ़ के चुनरियाँ सारी ''माँ का रूप दमके''-२ ।। ३ ।।

## (२)

एक से बढ़कर एक चढ़ी देख चुनरियाँ मतवाली,
लाज के वश उसने अपनी चुनड़ी थैले में डाली,
मन ही मन उसने सोचा, इसका क्या है मोल भला -२,
चुनड़ी चढ़ा ना पाया ''माँ को शरम से''-२ ।। ४ ।।

माँ का कीर्तन शेष हुआ हर सेवक घर को आया,
आधी रात को चुपके से निर्धन मंदिर में आया,
इधर उधर उसने देखा, लगा उसे अच्छा मोका-२,
अपनी चुनरिया चढ़ाई ''माता के सिर पे'' -२ ।। ५ ।।

अगले दिन माँ के दर पे भीड़ बड़ी थी लगी हुई,
चढ़ी हुई सब चुनरियाँ एक तरफ थी पड़ी हुई,
निर्धन सेवक की चुनड़ी, माँ के सिर थी सजी हुई-२,
''हर्ष'' खुशी के आँसु ''आँखो से टपके''-२ ।। ६ ।।





*(जनम दिन)*

*(राग रचयिता : राजू मेहरा मो॰ ९४३३०८०१७८)*

लो आज आया रे जनम दिन दादी का,
ढ़ोल ढ़फली बजाओ झूमो नाचों और गाओ -२,
आज दर्शन देगी माँ, जनम दिन दादी का ।। टेर ।।

बड़े है नसीबा मेरी दादी घर आयेगी,
घर मेरे आके मेरा मान बढ़ायेगी,
उल्लास लाया रे, जनम दिन दादी का... ।। १ ।।

चरणों मे दादी जी के मैं तो बिछ जाऊंगा,
होले होले दादी जी के चरण धुलाऊंगा,
उच्छाव छाया रे, जनम दिन दादी का... ।। २ ।।

लाल लाल दादी जी की चुनड़ी रंगाई है,
चुनड़ी को देख मेरी दादी दौड़ी आई है,
मुझे आज भाया रे, जनम दिन दादी का... ।। ३ ।।

''हर्ष'' दिवाना देखो बाँटे रे बधाई,
आज खुशी से नाचे लोग लुगाई,
मुझे रास आया रे, जनम दिन दादी का ।। ४ ।।

*(तर्ज : ओ पालन हारे...)*

सुनले ओ दादी, पूछे फरियादी,
मेरे घर मैया कब आओगी,
कितनों की तूने, किस्मत चमका दी,
मेरे घर मैया कब आओगी ।। टेर ।।

जल्दी आजा क्युँ देर लगाई,
तेरे बेटे को अब ना समाई,
अंतर छिड़काया, आंगन महकाया ।। १ ।।

आजा चरणों को दादी पखारूँ,
तेरे मुखड़े को मैया निहारूँ,
आँचल की छाया, करदे महामाया ।। २ ।।

तेरी चौखट पे अरजी लगाई,
दादी कर लेना मेरी सुनाई,
करूणा की सिन्धु, ममता की छाया ।। ३ ।।

''हर्ष'' तेरा दिया दादी खाऊँ,
तेरी निशदिन माँ ज्योत जगाऊँ,
बेटे ने तेरा, माँ किर्तन करवाया ।। ४ ।।





*(देता हरदम सांवरे...)*

साचाँ तेरा नाम है साचाँ तेरा धाम,
चरणों में माँ राणीसती तेरे, बारम्बार प्रणाम ।।

बिन तेरे माँ काम कोई हो नहीं सकता,
माँ तेरा सेवक कभी भी रो नहीं सकता,
साँची है सकलाई माँ साचाँ तेरा काम ।। १ ।।

आज पहली बार मैं दरबार आया हूँ,
देखले मुझको मैं जग से हार आया हूँ,
मुझको भी देदे जरा आँचल की तू छाँव ।। २ ।।

''हर्ष'' ने दरपे तेरे अरजी गुजारी है,
थामले या छोड़ दे मरजी तुम्हारी है,
तोड़के मैं तो आ गया रिश्ते आज तमाम ।। ३ ।।

*(तर्ज : नदिया बहे बहे रे धारा...)*

जीवन चार दिनों का फेरा, छोड़के बंदे तेरा मेरा,
तुझको जाना होगा, तुझको जाना होगा ।। टेर ।।

झूठी जगत की है सारी ये माया,
तेरी तो अपनी नहीं प्यारे काया,
ओरें दिवाने काहे तु भरमाये ऽऽऽ,
कोड़ी के बदले जिन्दगानी बिताई... ।। १ ।।

खाली हाथों को लेके जग में तु आया,
झूठी दौलत पे काहे तु इतराया,
साथ तेरे ना ये जायेगी माया ऽऽऽ,
खाली हाथो ही तेरी होगी विदाई... ।। २ ।।

ओरों की खातिर जिसने जीना है जाना,
''हर्ष'' सफल है उसका दुनिया में आना,
हारे हुए का प्यारे साथी बने तो ऽऽऽ,
होगी प्रभु से तेरी प्रेम सगाई... ।। ३ ।।





*(तर्ज : मेरी बिगड़ी बनाने वाला...)*

सूखे में जो, लाल सुलाये, गीले में जो, खुद सो जाये,
वो माँ है, वो माँ है, वो माँ ही तो है ।। टेर ।।

जिसने तुझको जन्म दिया है, उस जननी को मत भूलो,
हाथ पकड़ के बड़ा किया है, उस माता से मत रूठो,
नौ महीने गर्भ में पाला, मुख में दिया जिसने निवाला,
वो माँ है, वो माँ है, वो माँ ही... ।। १ ।।

तुझे सुलाने की चिन्ता में, खुद जो कभी ना सोई थी,
तेरी तकलीफों के क्षण में, जिसकी आँखे रोई थी,
गोदी का पलना बनाया, हाथों से जिसने झुलाया,
वो माँ है, वो माँ है, वो माँ ही... ।। २ ।।

''हर्ष'' भला फिर उस माता को, कैसे तु बिसरायेगा,
जननी के उन उपकारों का, कैसे कर्ज चुकायेगा,
वेदों का ज्ञान कराया, सत्कर्म का पाठ पढ़ाया,
वो माँ है, वो माँ है, वो माँ ही... ।। ३ ।।

(तर्ज : छम्मा छम्मा...)

कर ना सका जो कोई कर गया रे,
राम जी के दुखड़ों को हर गया रे -२,
रामा रामा रटे है वीर हनुमाना,
राम को मनाये बाबा, राम को रिझाये बाबा, दिल में बसाये,
रामा रामा... ।। टेर ।।

राम की सेवा, करे ये देवा, प्रभु का ध्यान धरे,
राम ही गावे, राम को ध्यावे, सदा गुणगान करे,
पग घुंघरू बंधाये बाला झूमे नाचे गाये-२, प्रभु महिमा सुनाये,
रामा रामा... ।। १ ।।

बड़ी है भगती, बड़ी है शक्ति, बड़ा है नाम तेरा,
दयालू दाता, राम को ध्याता, करुं गुण गान तेरा,
राम दरश कराये सीना चीर दिखाये-२, राम दिल में बिठाये,
राम रामा... ।। २ ।।

राम का प्यारा, आंख का तारा, सदा श्री राम जपे,
राम रघुराई, रोम के माही, सदा श्री राम बसे,
रामनाम नहीं पाये माला तोड़ गिराये-२, ''हर्ष'' राम सुहाये,
रामा रामा... ।। ३ ।।





*(तर्ज : मोहब्बत की झूठी कहानी...)*

बहुत रात बीती अरे अब तो आजा
लखन लाल सोया, तु आके जगा जा ।। टेर ।।

न सोचा था ये दिन, मैं देखुगां बाला,
हमेशा मुसीबत से, तुमने निकाला,
तेरे राम पे, मेहरबानी दिखा जा ।। १ ।।

अगर बूँटी लेके, अब तु न आये,
तेरे राम को फिर, जिन्दा न पाये,
मेरे लाल की, जिन्दगानी बचा जा ।। २ ।।

भला कब गया था, तु लाने संजीवन,
तेरे हाथ प्यारे, भाई का जीवन,
कहे ''हर्ष'' मेरी, तु लाज बचा जा ।। ३ ।।

*(तर्ज : मोरछड़ी के आगे...)*

भगतां रा भूत भगाओ -२,
बैठ्या मेहन्दीपुर दरबार भगतां रा भूत भगाओ ।। टेर ।।

कोई लाग लपेट में आवे, शरणागत थारे आवे,
देवो घोटे ने घुमाय, भगतां रा भूत भगाओ... ।। १ ।।

थाने प्रेत देखकर काँपे, और भूत भूतणी नाचे,
मारो पटक-पटक हनुमान, भगतां रा भूत भगाओ... ।। २ ।।

कोई ज्यादा अकड़ दिखावे, उलटो बीने लटकावे,
देवो सांकल माहीं बाँध, भगतां रा भूत भगाओ... ।। ३ ।।

यो ''हर्ष'' भगत गुण गावे, चरणा में शीश झुकावे,
थारी अलबेली सरकार, भगतां रा भूत भगाओ... ।। ४ ।।





*(तर्ज : हाथी ना घोड़ा ना...)*

भोर होणै स्यूं पहल्यां, आओ वीर हनुमत,
सागै संजीवणी थे ल्याओ , बालाजी,
आओ बालाजी आओ, संजीवण बूंटी ल्याओ ।। टेर ।।

भाई नै म्हारै, मुर्छा आई, ''याद करे, थाने रघुराई''-२,
करो कृपा थे हे बजरंगी,
लक्ष्मण का प्राण बचाओ, बालाजी ।। १ ।।
भाई बिना इब, मैं कठे जाऊं, ''माता नै कैंया, मुंडो दिखाऊँ''-२,
भली करो थे अंजनी का लाला,
ल्यावण संजीवणी थे जाओ, बालाजी ।। २ ।।
उठायो पर्वत, हाथ के माहीं, ''रात की घड़ियां, बीतण नै आई''-२,
पवन वेग सै थे हनुमन्ता,
सूरज उग्यां सूं पहल्या आया, बालाजी ।। ३ ।।
लेकर संजीवणी, झट कपि आया, ''भाई लखन का, प्राण बचाया''-२,
अजर अमर हो थे हनुमाना,
रघुवर गले से लगाया, बालाजी ।। ४ ।।

''हर्ष'' बालाजी आया, संजीवन बूंटी ल्याया ।।

*(तर्ज : ये रेशमी जुल्फें...)*

रघुवर की बिगड़ी को, पल में संवारा है,
वीर तुझ सा नहीं और दूजा कोई ।। टेर ।।

तेरी, शक्ति का हनुमत, कहना ही क्या,
कोई, कर ना सका करके, दिखा ही दिया,
लक्ष्मण जब मुर्छा खाये, संजीवन बूंटी ले आये ।।१।।

कपटी, रावण को तूने, हिला ही दिया,
क्षण में, घूंसे से पानी, पिला ही दिया,
दानव वंश का नाश किये, सोने की लंका खाक किये ।।२।।

बैरी, अहिरावण की, चाल ना चली,
''हर्ष'', पाताल पहुँचे, बजरंग बली,
कांधो पे अपने बैठाये, राम लखन लेके आये ।।३।।





*(राग रचयिता - प्रवीन बेदी)*

राम नाम का पीकर प्याला तर गये कैसे कैसे,
राम हवाले करदे जीवन रखे चाहे जैसे,
जिये जा राम भरोसे, जिये जा राम भरोसे ।। टेर ।।

एक भरोसा था भिलनी को जूठे बेर खिलाई थी,
विभिषण ने राज पाट में लंका नगरी पाई थी,
राम नाम बिन मिट गये देखो, पापी रावण जैसे ।।
राम हवाले करदे... ।। १ ।।

चरण धोयकर केवट माझी भव से पार हुआ था,
मित्र बना सुग्रीव तो भगतो खोया राज मिला था,
चूर चूर हो गिरे धरा पर, अधमी बाली जैसे ।।
राम हवाले करदे... ।। २ ।।

हनुमत जैसा राम का दूजा सेवक ना बन पाया,
भक्त शिरोमणी तीन लोक में बजरंगी कहलाया,
''हर्ष'' बनो तुम राम के सेवक, हनुमान के जैसे ।।
राम हवाले करदे... ।। ३ ।।

*(तर्ज : पंचवटी के घाट घाट पर...)*

राम भक्त हनुमान सदा तू आता सबके काम,
भली मेरी कर देना-२ ।। टेर ।।

धोक लगाने तेरे द्वार पे आया-२,
सेवक तेरा तरस रहा है, दर्शन दो हनुमान,
भली मेरी कर देना ।। १ ।।

अगर - कपूर की ज्योत जगाई-२,
बालक तेरा करे आरती, सुनो मेरी अरदास,
भली मेरी कर देना ।। २ ।।

लड्डुअन का बाबा तेरे भोग लगाऊं-२,
आज हमारे घर भी जीमो ''हर्ष'' करे मनुहार,
भली मेरी कर देना ।। ३ ।।





*(तर्ज : आने से उसके आये बहार...)*

व्याकुल हुए थे, जब भी श्री राम
करने सका ना, कोई जो काम,
करके दिखाया है, तूने बजरंग बली ।। टेर ।।

आ पड़ी मुसीबत, पड़े लक्ष्मण जी मुर्छित जमीं पे,
था सिवा ना तेरे, लाये बूंटी जो झटपट कहीं से,
हाथों में, पर्वत को, झट से उठाया है,
तूने बजरंग बली... ।। १ ।।

माँ सिया को हर के, लाया धोखे से लंका में रावण,
जल गई वो नगरी, वीर बजरंग बली तेरे कारण,
सोने की, लंका को, पल में जलाया है,
तूने बजरंग बली... ।। २ ।।

हिल उठी ये धरती, कपि गुस्से में जब जब हुंकारे,
भीम रूप धरके, बाला चुन चुन के दुष्टों को मारे,
सीता से, रामजी को, ''हर्ष'' मिलाया है,
तूने बजरंग बली... ।। ३ ।।

*(तर्ज : दिल दिवाना ना जाने...)*

सांझ सवेरे लेते राम का नाम है,
इसके सिवा दूजा ना कोई काम है,
ध्यावे सदा, गावे सदा, पूजे सदा श्री राम ।। टेर ।।

राम के सच्चे दास हैं, राम के सेवक खास हैं,
पल भर ना छोड़े उन्हें, रहते राम के पास हैं,
राम रिझाते बाबा सुबह-शाम है,
इसके सिवा दूजा ना कोई काम है ।
ध्यावे सदा, गावे सदा, पूजे सदा श्री राम ।। १ ।।

भक्त कोई हनुमान सा, होगा ना भगवान का,
घर-घर में डंका बजे, वीर बली हनुमान का,
राम दिवाने का दुनिया में नाम है,
इसके सिवा दूजा ना कोई काम है ।
ध्यावे सदा, गावे सदा, पूजे सदा श्री राम ।। २ ।।

महारुद्र अवतार है, सालासर सरदार है,
''हर्ष'' जो मन से ध्यान धरे, उसका बेड़ा पार है,
मेहन्दीपुर बाबा का सच्चा धाम है,
इसके सिवा दूजा ना कोई काम है ।
ध्यावे सदा, गावे सदा, पूजे सदा श्री राम ।। ३ ।।





*(तर्ज : बांके बिहारी लाल तेरी जय होवे...)*

शंकर के अवतार तेरी जय होवे,
सालासर सरदार तेरी जय होवे,
जय होवे, तेरी जय होवे, तेरी जय होवे, तेरी जय होवे-२ ।।

सियाराम के बनके सहारे, रघुवर के सब काज संवारे-३,
किये हर मुश्किल से पार, तेरी जय होवे ।। १ ।।

रोम रोम में राम बसाये, राम सिया का दरश कराये-३,
दिये सीना फाड़ दिखाये, तेरी जय होवे ।। २ ।।

तीनलोक में शक्तिशाली, तेरा वार न जाये खाली-३,
दुष्टों का तू काल, तेरी जय होवे ।। ३ ।।

अष्ट सिद्धि-नव निधि के दाता, जो भी तेरा ध्यान लगाता-३,
करे भवसागर से पार, तेरी जय होवे ।। ४ ।।

''सेवा संघ'' प्रभु तेरे द्वारे, मिलकर गाये भजन तुम्हारे-३,
''हर्ष'' का कर उद्धार, तेरी जय होवे ।। ५ ।।

*(तर्ज : अगर दिलवर की रूसवाई...)*

अगर चरणों की ओ कान्हा, जरासी धूल मिल जाये,
मेरी किस्मत की मुरझाई कली, फिर से खिल जाये ।।

मिली नफरत मुझे कान्हा, इसी जालिम जमाने से ऽऽऽ,
मेरे गम दूर हो जायें, ''तेरे नजदीक आने से''-२,
अगर चरणों में रखले तो मुझे, खुशियां ही मिल जाये,
मेरी किस्मत... ।। १ ।।

तुम्हारा नाम लेकर, कन्हैया आज रोता हूँ ऽऽऽ,
ना दिन में चैन मिलता है, ''ना मैं रातों को सोता हूँ''-२,
जरा तू देखले इकबर मेरा, चितवन ही खिल जाये,
मेरी किस्मत... ।। २ ।।

मेरी वीरान आंखो में, तेरी तस्वीर बसती है ऽऽऽ,
मेरी इस बदहवाली पे, ''मेरी तकदीर हंसती है''-२,
कहीं ऐसा ना हो तेरे ''हर्ष'' की, आँखे पिघल जाये,
मेरी किस्मत... ।। ३ ।।





*(तर्ज : इक मुलाकात जरूरी है सनम...)*

अब जुदाई नहीं होती है सहन-२,
तेरे दरसन को तरसते है नयन ।। टेर ।।

अरे खाटूवाले तू दर्शन दिखा
मेरा दिल तो तुझपे हुआ है फिदा
नहीं रखना खुद से तू मुझको जुदा
दिवाने की सुनले तू इतनी सदा
दिवाने का ओ साँवरे बड़ा ही बुरा हाल है
खड़ा है तेरे द्वार पे ''बतादे क्या ख्याल है''-३
तेरे दरसन को ... ।। १ ।।

जुदा होके तुझसे न जी पाऊँगा
मेरे साँवरे मैं तो मर जाऊँगा
दया जो दिखाये तो तर जाऊँगा
तेरी बन्दगी से सँवर जाऊँगा
दिवाने को ओ साँवरे तेरी ही दरकार है
तूही तो मेरी नाव है ''तू ही तो पतवार है''-३
तेरे दरसन को... ।। २ ।।

## ( २ )

''मेरी सुनले इकबर, तू जो दिलदार मिले
रोते दिल को मेरे थोड़ा सा करार मिले
तुझसे बिछड़ुं जो अगर बोल मै जाऊँ किधर
आँख मैं फेरूँ जिधर बस तू ही तू आए नज़र''

तेरा ''हर्ष'' कैसे करे शुक्रिया
मुझे भी तेरे दर के काबिल किया
मुझे अब जमाने से लेना है क्या
मेरे दिल ने चाहा वो मुझको मिला
दिवाने की दिवानगी तो खाटूवाला श्याम है
नैनो में तेरी बंदगी ''जुबां पे तेरा नाम है''-३
तेरे दरसन को... ।। ३ ।।

निगाहें श्याम की चुम्बक का काम करती हैं ।
नशा सा चढ़ गया जामों पे जाम भरती हैं ।।





***''झूलनोत्सव''***

*(तर्ज : आ मेरे हमजोली आ...)*

आ रे श्याम सलोने आ, झूलें आज हिन्डोले आ
सावन की फुहारों में, बागो में बहारो में, हो sss
आ झूलें हम झूला,
तू आजा, ना ना, तु आजा -ना ना, आजा-ना ना,
तु आजा, आया... ।। टेर ।।

जमुना के तट पर बैठी है कबसे तेरी राधा,
इतनी जल्दी भूल गया तु कर गया श्याम जो वादा,
तू छलिया बड़ा - तू छलिया बड़ा ।। १ ।।
मधुबन में बाजी ओ कान्हा जब से तेरी मुरलिया,
सर से मेरे अनजाने ही सरक गई रे चुनरिया,
तू छलिया बड़ा - तू छलिया बड़ा ।। २ ।।
ओ तेरी राधा से तु छुप सकता है ओ मेरे छलिया,
लेकिन मेरे दिल से बचना मुश्किल है सांवलिया,
तू छलिया बड़ा - तू छलिया बड़ा ।। ३ ।।
कैसा लुक छुप का खेल रचाया है श्याम साँवरिया,
''हर्ष'' दिवानी ढूँढ रही है सारे बिरज की गुजरिया,
तू छलिया बड़ा - तू छलिया बड़ा ।। ४ ।।

*(तर्ज : चान्द जैसे मुखड़े पे...)*

आज बाबा दुखड़ों में घिर के मैं हारा,
तूही हारे का मेरे श्याम, है सहारा है सहारा,
आया तेरे दरपे जो, तूने ही उबारा है उबारा,
तूही हारे का मेरे श्याम, है सहारा है सहारा ।।

दर दर मैने ठोकर खाई, कोई मिला ना सहारा,
पल पल ऐसे तड़पा जैसे, माटी बिन जल धारा,
बीच भंवर में भटकूं बाबा, सूझे नहीं किनारा हो किनारा ।।

आज बड़ों की इस दुनिया में, मैं हूँ बिल्कुल छोटा,
मेरे अपनों ने ही मुझको, लूटा और कचोटा,
दीनों की बिगड़ी को बाबा, तूने है संवारा हो संवारा ।।

अब तो मेरी सुनलो दाता, ना ऐसे तरसाओ,
''हर्ष'' खड़ा है हाथ पसारे, ना ऐसे बिसराओ,
भगतों का तुझसे ही बाबा, चलता है गुजारा हो गुजारा ।।





*(तर्ज :मेरा दिल भी जाना ...)*

आजा रे आजा अब तो श्याम मुरली वाले,
तुझको बुलाये तेरे चाहने वाले ।। टेर ।।

छाई बड़ी उदासी है,
आँखे दर्श की प्यासी है,
जीवन किया है हमने तेरे हवाले ।। १ ।।

राहों में हम आज खड़े,
आजा अब क्यूँ देर करे,
तू ना सम्भाले तो फिर कोन सम्भाले ।। २ ।।

हम तो तेरे दिवाने हैं,
प्रेमी बड़े पुराने हैं,
दर्द जुदाई से अब आके बचाले ।। ३ ।।

''हर्ष'' कन्हैया आओ ना,
अपनों को तरसाओ ना,
हमसे भी आके थोड़ी प्रीत तू निभाले ।। ४ ।।

*(तर्ज : वादा ना तोड़...)*

आजा रे श्याम - आजा रे श्याम
आजा, कबसे दिवाने तरसे ऽऽऽ
लेके तेरा नाम, आजा रे श्याम ।। टेर ।।

बैठे दिवाने तेरे आँखे बिछाये,
आजा सलोने हमे काहे तरसाये,
आजा कबसे दिवाने तरसे ऽऽऽ ।। १ ।।

वादा निभाना होगा भगतों से तुझको,
लीले के सवार आके दर्शन दे मुझको,
आजा कबसे दिवाने तरसे ऽऽऽ ।। २ ।।

अरे खाटू वाले तू है हारे का सहारा,
''हर्ष'' दिवाना पूछे हमे क्युँ बिसारा,
आजा कबसे दिवाने तरसे ऽऽऽ ।। ३ ।।





*(तर्ज : तोबा तोबा इश्क मैं करिया...)*

आजा कान्हा प्यासी है अँखिया, झर-झर रोये, ये सारी रतियां,
दर्शन देदे, कबसे मैं तरसु, तरसाओ ना, आजा ओ छलिया,
तुही मेरी जिन्दगी-तुही है हर खुशी-बाबा मेरे, तुही मेरी बंदगी,
आजा आजा श्याम मन बसिया... ।।

तुही मेरा खेवन हारा, तुझपे ये तनमन वारा,
हो सदा साथ तुम्हारा दास तेरा अरदास लगाये,
मैं हुँ तेरा दिवाना, साँवरे गले लगाना,
ना मुझे तु बिसराना दास तेरा अरदास लगाये ।। तुही मेरी...

श्याम मेरी आस ना टूटे, श्याम तेरा साथ ना छूटे,
श्याम विश्वास ना टूटे, दास तेरा अरदास लगाये,
दिल को बस तुही भाया, चैन तुमने है चुराया,
बावरा मुझको बनाया, दास तेरा अरदास लगाये।। तुही मेरी...

श्याम मेरी आस पुरादे, श्याम मोहे दर्श दिखादे,
सोई तकदीर जगादे, दास तेरा अरदास लगाये,
श्याम ये ''हर्ष'' पुकारे, श्याम मोहे ना तरसा रे,
मै तो हुँ तेरे सहारे, दास तेरा अरदास लगाये।। तुही मेरी...

*(तर्ज : ऐसा देश है मेरा..)*

आँखे नीली, घोड़ा नीला, देव बड़ा रंगीला,
ऐसा श्याम है मेरा-२, ओऽऽऽ
बड़ा हठीला ये गर्विला, रसिया छैल छबिला
ऐसा श्याम है मेरा-२ ।। टेर ।।

बैठा है खाटू में, दुनिया पे रोब चलाये,
अपने भगतो के सारे, ये बिगड़े काम बनाये,
सारे जग में बाजे, डंका इस देव का भारी,
ये कलीकाल का राजा, दीनो का है दातारी,
दर आये को गले लगाता-२, बाबा खाटूवाला,
ऐसा श्याम... ।। १ ।।





## ( २ )

हारे के साथी की, भक्तों हर बात निराली,
चौखट से इस दाता की, ना आया कोई खाली,
कितने गम के मारे, आते है इसके द्वारे,
अपने भगतों के बाबा, हरता है दुखड़े सारे,
मस्त रहेगा जो पी लेगा-२, श्याम नाम का प्याला,
ऐसा श्याम ... ।। २ ।।

आना ना बातों में, कोई कितना ही भरमाये,
बस एक दफा ही प्यारे, कोई खाटू नगरी जाये,
कहने की बात नही है, खुद जाके वो अजमाये,
जो ''हर्ष'' सुनी कानों से, नज़रों के आगे पाये,
कलियों सा कोमल कर देगा-२, रस्ता काँटो वाला,
ऐसा श्याम ... ।। ३ ।।

*(तर्ज : रोते हुए आते हैं सब...)*

आँखो को जो, मीचे हुए, श्याम की महिमा, गायेगा,
वो दिवाना, साँवरे की-२, पल में किरपा, पायेगा ।। टेर ।।

भाव से इसको रिझाले, प्यार का भण्डार है,
भाव का भूखा ये मेरा, साँवरा सरकार है,
भावना के सच्चे मोती, दुनिया में जो बिखरायेगा ।।१।।

साँचे मन से जो पुकारे, उसका बेड़ा पार है,
साथ सेवक का न छोड़े, ये बड़ा दिलदार है,
खाटू वाले साँवरे से, सच्ची लगन जो दिखलायेगा ।।२।।

''हर्ष'' हारे का ठिकाना, श्याम का दरबार है,
अपने सेवक के लिये ये, हर घड़ी तैयार है,
जो बनेगा सांवरे का, उसका ये बन जायेगा ।।३।।





*(तर्ज : हारे के सहारे हैं श्याम खाटू वाले...)*

आयो फागण मेलो थे भगतां ने सम्भालो,
भगतां ने सम्भालो थे बेटा ने सम्भालो ।। टेर ।।

हेलो आयो थारो थे सगला ने बुलाया,
हाथां में निशान लेके टाबरिया आया,
इबकी थे म्हाने भी चरणा में बिठाल्यो ।। १ ।।

मोटो है दरबार थारे क्याँ को है टोटो,
मनचाही पावे सारा खरो हो या खोटो,
इबकी थे म्हारी भी झोलियाँ भराद्यो ।। २ ।।

''हर्ष'' दिवानो थारो काली कोसां आयो,
साँवलिये के रंग में यो मनड़ो रंगायो,
इबकी थे भगतां सुं पागड़ी रंगाल्यो ।। ३ ।।

*(तर्ज : लग रही सोणी सोणी...)*

इस पर भी तो छोड़ो, कुछ इस पर भी तो छोड़ो,
तू एक अकेला क्या कर लेगा, इस पर भी तो छोड़ो ।। टेर ।।

खूंटी तान के सोना प्यारे खोल के कुण्डी ताला,
चिन्ता है किस बात की तेरा श्याम धणी रखवाला,
बस श्याम से नाता जोड़ो, बस श्याम से नाता जोड़ो ।। १ ।।

नरसी ने इस पर छोड़ा तो भात भरन ये आया,
धन्ना जाट का बनके हाली इसने हल चलाया,
झूठे अभिमान को तोड़ो झूठे अभिमान को तोड़ो ।। २ ।।

मैं और मेरे के चक्कर से खुद को जरा निकालो,
''हर्ष'' कहे रे छोड़के इसपे भक्तों मौज उड़ालो,
इसकी मरजी पर छोड़ो, इसकी मरजी पर छोड़ो ।। ३ ।।





***''श्री श्याम महोत्सव''***

*(तर्ज : होलिया में उड़े रे...)*

उत्सव की आई है ये शाम, देखो रे देखो रंग बरसे,
लूटो लुटाये बाबा श्याम, देखो रे देखो रंग बरसे ।। टेर ।।

रात श्याम सपने में आये,
करो तैयारी हुकम सुनाये,
दूंगा दया का आके दान ।। १ ।।

उत्सव में जो आज पधारे,
चमक उठे तकदीर के तारे,
बाबा रखेगें उनका मान ।। २ ।।

''हर्ष'' बड़ा ही पावन मौका,
आज श्याम ने भेजा तोहफा,
ये है दिवानों का ईनाम ।। ३ ।।

*(तर्ज :आजा आजा रे कन्हाई तेरी याद आई...)*

ओल्यूँ आवे रे कान्हुड़ा आख्याँ भर आई,
भर आई रे आख्याँ भर आई-२ ।। टेर ।।

गाँव गयो और, सुत्यो जागे,
बिन तेरे सब, सूनो लागे-२
रस्तो जोवां तेरो आख्याँ म्हारी पथराई ।। १ ।।

तू छलियो है, तू हरजाई,
प्रीत की चोखी, रीत निभाई-२,
हाँसी घाले रे जमानो क्युँ ना लाज आई ।। २ ।।

ग्वालां संग कुण, खेल रचावे,
राधा संग कुण, रास रचावे-२,
चारो खावे कोन्या गायाँ तेरी कुम्हलाई ।। ३ ।।

गोकुल वृंदावन मुरझायो,
''हर्ष'' तु म्हाने, क्यूँ बिसरायो-२,
कैयां होवे रे कन्हाई तेरी भरपाई ।। ४ ।।





*(तर्ज : थाली भर कर...)(चूड़ी धाम का भजन)*

एक पेड़ पर मिसरी लागे, जाकर थे आजमाल्यो जी,
जितणी चाहो तोड़-तोड़ कर, जी भर के थे खाल्यो जी ।।

चैत सुदि नौमी सूं पूनम तक री महिमा भारी जी,
सात दिनां मिसरी फल खावे लाखां ही नर नारी जी,
साँचो परचो सेठ श्याम को जाकर धोक लगाल्यो जी ।।१।।

गाँव मियाँ की चूड़ी मांही सुन्दर भवन निरालो है,
खेतां मांही राज करे जी बाबो खाटू वालो है,
परमानन्द परमसुख मिलसी जीवन सफल बणाल्यो जी ।।२।।

एक बार तू जासी भाया सुरगां सो सुख पासी रे,
श्याम शरण में चाल रे भाया बैठ्यो मौज मनासी रे,
मतना देर लगाओ भगतों जाकर किरपा पाल्यो जी ।।३।।

*(तर्ज : कद आवेलो बलम बैरी...)*

कद आवेलो बतादे कान्हा घर म्हारे,
जीवड़ो ना लागे थारी ओल्युँ आवे ।। टेर ।।

कान्हा थारी यादड़ली मैं ना जागुं ना सोऊँ,
थारे विरह में सुन्नो होग्यो ना हासुँ ना रोऊँ,
कद आवेलो... ।। १ ।।

कदस्युँ थारी बाट निहारूँ आँखड़ल्यां पथराई,
पण निर्मोही तेरे दास पर तने दया ना आई,
कद आवेलो... ।। २ ।।

आणो है तो बेगो आज्या मतना युँ तरसावे,
दिन के माही चैन पड़े ना रात्युँ नीन्दा आवे,
कद आवेलो... ।। ३ ।।

''हर्ष'' कन्हैया तरसाणे की थारी बाण पुराणी,
जीव जलावे म्हारो बैरण याद तेरी मरजाणी,
कद आवेलो... ।। ४ ।।





*(तर्ज : हमें तो लूट लिया...)*

कलेजा छीन लिया सांवरे की यारी ने
अदायें प्यारी ने छवि मनुहारी ने ।। टेर ।।

लगाके होठ से बंशी युँ मुस्कुराते हो,
दिवाने सेवकों की नींद तुम चुराते हो,
सलोनी सांवली सूरत का जादू छाया है,
उड़े है होश तु होले से मुस्कुराया है,
निगाहें श्याम की चुम्बक का काम करती है,
नशा सा चढ़ गया जामों पे जाम भरती है ।। १ ।।

तुम्हारे रूप को देखा तो मात खाई है,
तभी से जान की बाजी यहाँ लगाई है,
तेरे दिदार मे गर खो गये नहीं होते,
तुम्हारी याद में छुप छुप के युँ नही रोते,
तुम्हारी झील सी आँखो में झाँक कर देखा,
गजब ये क्या हुआ हम खा गये अरे धोखा ।। २ ।।

## ( २ )

समझ लो अपना युँ बुरा क्युँ मान बैठे हो,
पराया मुझको अरे क्युँ जान बैठे हो,
निगाहो से निगाहे श्याम युँही टकराये,
दिवाना ''हर्ष'' ये दर से जुदा ना हो पाये,
कलेजा श्याम तेरे पास में अमानत है,
हमें भी खास समझा आपकी इनायत है ।। ३ ।।

कलेजा श्याम तेरे पास में अमानत है ।
हमें भी खास समझा आपकी इनायत है ।।

कलेजा छीन कर तूने मुझे निहाल किया,
छुड़ाया दर्द से मुझको बड़ा कमाल किया।
भँवर गहरा बड़ा था ऐ मेरे हम दम,
बढ़ाके अपने हाथों को मुझे निकाल दिया ।।





*(तर्ज : यारां सिली-सिली...)*

कान्हा होले होले, चुपके से आपका हँसना,
मीठी मीठी तानों से, दिल में उतरना ।। टेर ।।

साँवला सा रूप तेरा, मोहिनी अदायें रे,
बंसरी की मीठी तानें, बावरा बनाये रे,
भाये मेरी अँखियों को-२, तेरा संवरना ।।१।।

बैरी मुस्कान तेरी, निन्दिया उड़ाये रे,
आँखों के रस्ते मेरे, दिल में समाये रे,
हुआ तेरी गलियों से-२, मुश्किल गुजरना ।।२।।

नैनों के बाण मारे, दिल पे कन्हाई रे,
''हर्ष'' दिवानी तेरी, तुमने बनाई रे,
मुश्किल तेरी निगाहों से-२, बच के निकलना ।।३।।

*(तर्ज : चन्ना वे घर आजा वे...)*

कान्हुड़ा घर आजा रे - कान्हुड़ा घर आजा रे
तेरा ये सलोणा सोणा मुख छलिये,
भगतों को आके दिखाजा रे ।। टेर ।।

बैठे हैं सब आँखे बिछाये, काहे कान्हा देर लगायें,
दिखला दे तेरा रूप सलोना, भगतों का मन क्युँ तरसाये ।।

दिल की बगिया खाली खाली, तुझ बिन सूनी ओ बनमाली,
महक उठेगा मधुबन मेरा, एक नजर जो तूने डाली ।।

जब तू होगा सामने मेरे, मिट जायेगें हर गम मेरे
''हर्ष'' दिवाने नाच उठेगें, मिल जाये जो दर्शन तेरे ।।





*(तर्ज :बालम छोटो सो...)*

कान्हुड़ो सलूणो माँ सुं हट पकड़ी,
मेरो ब्यावलो करादे मेरी माय,
होग्यो मैं स्याणो ।। टेर ।।

छोटी सी लली माँ मेरे मन बसगी,
मेरे हिवड़े ने घणो बा लुभाय,
होग्यो मैं स्याणो ।। १ ।।

पगल्या दबासी तेरा दिन और रात,
बीने मेरे सागे दे माँ परणाय,
होग्यो मैं स्याणो ।। २ ।।

दहिड़ो बिलोसी मैया झगर-मगर,
मै तो जाय चराय ल्यांसु गाय,
होग्यो मैं स्याणो ।। ३ ।।

''हर्ष'' भरेली बाबुजी को बा तो हुक्को,
दे बेगी सी नेग पठाय,
होग्यो मैं स्याणो ।। ४ ।।

*(तर्ज : कोई जब तुम्हारा...)*

किसी का तुझे जब सहारा न हो, जहाँ में कोई जब तुम्हारा न हो,
तब तुम शरण मेरी आ जाना रे, मेरा दर खुला है खुला ही रहेगा
तुम्हारे लिये, ऐ हारे हुये ।। टेर ।।

मिली जो जमाने से ठोकर तुझे, गले अपने प्यारे लगा लूंगा मैं,
किया तेरे अपनों ने रूसवा अगर, तुझे अपना प्यारे बना लूंगा मैं,
झुकना तुझे जब गवारा न हो, अकेले में तेरा गुजारा न हो,
तब तुम शरण मेरी... ।। १ ।।

नही काम तेरे कोई आयेगा, मुसीबत में साथी बनुँगा तेरा,
भंवर में अगर नाव फंस जाये तो, मेरा नाम दिल से पुकारो जरा,
कश्ति का कोई किनारा न हो, माझी जो कोई तुम्हारा न हो,
तब तुम शरण मेरी... ।। २ ।।

किसी दीन का तु जो साथी बने, तुझे साथ मेरा भी मिल जायेगा,
अगर ''हर्ष'' स्वार्थ का पुतला बना, अकेला तु खुद को अरे पायेगा,
किस्मत का रोशन सितारा न हो, किसी ने भी मुड़के पुकारा न हो,
तब तुम शरण मेरी... ।। ३ ।।





*(तर्ज : एक तेरा साथ हमको...)*

कीर्तन करतां श्याम आधी रात घिर आई जी,
थे कइयाँ देर लगाई जी ।। टेर ।।

कदसुं बुलावे है, रो रो भगत थारा, पधारो श्याम जी,
हर पल घड़ी म्हारे, होठां सुं निकले है, धणी थारो नाम जी,
जोवां थारी बाट म्हारी आख्याँ पथराई जी ।। १ ।।

म्हासुं अगर कोई, गलती हुई बाबा, तो दीज्यो थाप की,
कइयाँ सही जावे, म्हासुं बताओ थे, जुदाई आप की,
म्हारी भूलां ने सदा थे साँवरा भुलाई जी ।। २ ।।

जद भी पुकार्यो है, थारो भगत थाने, थे आया तावला,
म्हाने भुलाया क्युँ, थे ''हर्ष'' कान्हुड़ा, म्हे होग्या बावला,
बेगा आओ श्याम म्हारे और ना समाई जी ।। ३ ।।

*(तर्ज : कोई जब राह न पाये...)*

कोई तुझको बिसराये, तु क्युँ घबराये
ये पग पग साथ निभाये ऽऽऽ
खाटू वाला मेरा श्याम, लीले वाला मेरा श्याम ।। टेर ।।

हारे का है सहारा मेरा श्याम, कश्ति का है किनारा मेरा श्याम,
दुखड़ो में आये यही तेरे काम -२,
कोई तकलीफ सताये, तु क्युँ घबराये, ये पल में आन मिटाये ऽऽऽ,
खाटू वाला मेरा श्याम, लीले वाला मेरा श्याम ।। १ ।।

मांगेगा जो मिलेगा उतना, सच होगा तुम्हारा सपना,
चरणों में जाके जरा तु झुकना-२,
कोई नहीं पास बिठाये, तु क्यूँ घबराये, ये सिर पर हाथ फिराये ऽऽऽ,
खाटू वाला मेरा श्याम, लीले वाला मेरा श्याम ।। २ ।।

''हर्ष'' शरण तु आजा इक बार, भर देगा तेरे ये भण्डार,
सांवरा दयालु बड़ा ही दातार -२,
कोई तुझको ठुकराये, तु क्युँ घबराये, ये तुझको गले से लगाये ऽऽऽ,
खाटू वाला मेरा श्याम, लीले वाला मेरा श्याम ।। ३ ।।





*(तर्ज : सेठों की क्या करे नौकरी...)*

कोशिश करके हार गया हूँ, लीले वाले श्याम रे,
तेरे दम पे पूरे होगें, अब तो मेरे काम रे ।। टेर ।।

दुनिया की इस दौड़ में बाबा ''थक कर मैं तो चूर हुआ''-२
कैसे चलेगा मेरा गुजारा ''आज बड़ा मजबूर हुआ''-२
मान मिले ना इस दुनिया में-२, बिन दौलत बिन दाम रे ।।१।।

हाथ पसारूँ तो मैं बाबा ''इज्जत आड़े आती है''-२
जाके हाल सुनाऊँ किसको ''लाज मुझे अब आती है''-२
शरम नहीं कहने में तुझको-२, जाती नहीं है शान रे ।।२।।

बेबस और लाचार हूँ बाबा ''हाथ पकड़ले तु मेरा''-२
''हर्ष'' कहे तकदीर का लेखा ''आज बदल दे तु मेरा''-२
हर ठोकर पे श्याम पुकारूँ-२, मैं तो तेरा नाम रे ।।३।।

***(अफसाना लिख रही हूँ...)***

खाटूवाला समझाये, ऐ मेरे लाडलो,
आपस के झगड़े मेट के तुम प्यार बाँटलो ।। टेर ।।

आपस की रंजिशो में ''मुझको भुला बैठे''-२,
''इक प्रेम बड़ा है जगमें''-२ तुम इतना जानलो ।। १ ।।

सब कुछ दिया है मैंने मैं ''तुमसे ये माँगता''-२,
''बस प्रेम के इस बंधन में''-२ खुद को तुम बाँधलो ।। २ ।।

अपनों से बैर करके तुम ''मुझको ना पाओगे''-२,
''ये ''हर्ष'' नसीहत मेरी''-२ पल्ले से बाँधलो ।। ३ ।।





*(तर्ज : राधा के मन मे बस गये श्याम बिहारी...)*

खाटू के राजा आये शरण तिहारी,
ऐसा कुछ कर आज दयालु-२, बदले सोच हमारी ।। टेर ।।

जगत जाल में आन फँसे है, आज हुई मजबूरीयाँ,
मोह माया ने ऐसे जकड़ा, हो गई तुमसे दूरीयाँ,
नेम धरम सब भूल गये हम, माया लागे प्यारी ।। १ ।।

धन दौलत की भूख हमारी, दिन-दिन बढ़ती जाये,
किर्तन में भी बैठ हमारा, मन बैरी भरमाये,
भटक गये हम राह दिखादे, होगी किरपा भारी ।। २ ।।

श्याम सुधा रस का तू प्याला, हमको आज पिलादे,
''हर्ष'' तेरी चाहत में तड़पे, ऐसी लगन लगादे,
हम तो हैं माटी के पुतले, तुम हो सिरजन हारी ।। ३ ।।

*(तर्ज : इश्क दी गली विच नो एन्ट्री...)*

खाटू धाम जो गया बेड़ा पार हो गया -२,
देखो देखो कैसा चमत्कार हुआ है-२,
श्याम की दया से मेरा काम हुआ है ।। टेर ।।

पास में नहीं था कुछ मैं तो परेशान था,
दुखड़ो का मारा हुआ बड़ा हैरान था,
जब से मेरा साथी मेरा श्याम हुआ है ।।१।।

तूने ही दिया है सब मै तो यही मानता,
तेरी ही दया से मुझे सारा जग जानता,
भजनों की दुनियाँ में नाम हुआ है ।।२।।

''हर्ष'' दिवानों ये तो सच्चा दरबार है,
खाटू वाले सांवरे को भगतों से प्यार है,
दुखड़ो का खातमा तमाम हुआ है ।।३।।





*(तर्ज : खुश रहे तु सदा ये दुआ है मेरी)*

दोहा : तेरी चौखट पे ये मुझको तोहफा मिले ।
नाम जपता रहुँ इतनी किरपा रहे ।।

खुश रहुँ मैं सदा ये दुआ दे मुझे,
दास चरणों का तू आ बनाले मुझे ।। टेर ।।

अब ना तनहा रहा मुझको तू जो मिला-२,
साँवरे सा मुझे सच्चा साथी मिला,
दूर तुमसे रहूँ-२, ना सजा दे मुझे ।। १ ।।

उम्रभर मैं तेरा कान्हा गुण गाऊँगा-२,
रात दिन मैं तेरा साथ ही चाहुँगा,
क्या रजा है तेरी-२, तु बता दे मुझे ।। २ ।।

सात जनमों का तेरा पुजारी बना-२,
श्याम जी ना सकुँ अब मै तेरे बिना,
''हर्ष'' दर्शन जरा-२, तु दिखादे मुझे ।। ३ ।।

*(राग रचयिता : प्रवीन बेदी....मो.९८३०४३२६६९)*

घर घर घूमे घड़ी घड़ी मेरे श्याम धणी की मोर छड़ी,
श्याम धणी की मोरछड़ी बाबा की घूमे मोर छड़ी ।। टेर ।।

आँधलिया ने आख्याँ देवे, निर्धणिया ने माया जी-२,
बेटो पावे बाँझड़ली, बाबा की घूमे मोरछड़ी... ।। १ ।।

सुत्योड़ो टाबर डर जावे, या कोई रोग सतावे जी-२,
रोग मिटावे मोरछड़ी, बाबा की घूमे मोरछड़ी... ।। २ ।।

स्याणी बेटी घर में हो जद, फिकर सतावे भोत घणी-२,
बेटी परणावे मोरछड़ी, बाबा की घूमे मोरछड़ी... ।। ३ ।।

बड़ा बड़ा जो सेठ कुहावे, ऐंके आगे झुक जावे-२,
झाड़ो देवे मोरछड़ी, बाबा की घूमे मोरछड़ी... ।। ४ ।।

''हर्ष'' मुसीबत जद आवे तो, माणस शृणियो हो जावे-२,
करजो चुकावे मोरछड़ी, बाबा की घूमे मोरछड़ी... ।। ५ ।।





*(राग रचयिता : विकास कपूर मो. ९८३०२१०४३७)*

चुप चुपके - चुप चुपके चोरी से चोरी,
चुप चुपके - चुप चुपके रे,
देखलो, मेरे दिल को, साँवरा, ले गया है ।। टेर ।।

नैनों में कैसा ये जादू समाया,
पलकें उठा करके दिल को चुराया ।। १ ।।

होले से तेरा युँ पलकें उठाना,
आँखो के रस्ते से दिल में समाना ।। २ ।।

दिल को कन्हैया से कितना बचाया,
तिरछी निगाहों से बचने न पाया ।। ३ ।।

''हर्ष'' दिवानों की हालत बुरी है,
तेरी निगाहों की मस्ती चढ़ी है ।। ४ ।।

*(धमाल) (फागण)*

छुट्टी देदे साहुकार मन्ने खाटू जाणो है,
फागणिये में श्याम धणी सूं कोल निभाणो है ।। टेर ।।

कोल कर्‌यो थो श्याम धणी सुं हर फागण मै आस्युँ जी,
फागण की ग्यारस ने जाके शीश झुकाणो है ।। १ ।।

दो महनां की तनखा मन्ने आज अगाऊ दे दे रे,
खीर चूरमो सवामणी को भोग लगाणो है ।। २ ।।

एक बरस तक सेठ तेरे सूं छुट्टी कोन्या मांगुला,
अगले फागणिये तक तेरो हुकम बजाणो है ।। ३ ।।

पौ बाराह हो जावेला तु मेरे सागे चाल जरा,
सेठां को बो ''हर्ष'' बावला सेठ पुराणो है ।। ४ ।।





*(तर्ज : ममता की शीतल छाया में...)*

छोड़ चलुं मै जब ये दुनिया, बस इतना सा काम रहे,
होठों पर ऐ श्याम सलोने, सिर्फ तुम्हारा नाम रहे ।
स्वर्ग मिले या नर्क मिलेगा, ये कर्मो का लेखा है,
लेकिन तेरे दास के दिल में, श्याम तुम्हारा धाम रहे ।।

श्याम नाम की ओढ़ चदरिया गहरी नीन्द में सो जाऊँ,
अंश तुम्हारा हुँ मैं बाबा तुझमें जाकर खो जाऊँ,
गूँज तुम्हारे नाम की मेरे कानों में घनश्याम रहे ।।१।।

जाते जाते इतनी सी बस श्याम तेरी किरपा चाहुँ,
रस्ते में मंदिर हो तेरा मंजिल को जब मैं जाऊँ,
चरणों में तेरे दास का बाबा अंत समय प्रणाम रहे ।।२।।

शुक्ल पक्ष की ग्यारस होवे दुनिया से जब गमन करूँ,
श्याम जरा तुम आ जाना जब चिता पे जाके शयन करूँ,
मुख मे तुलसी दल तु देना इतना तेरा काम रहे ।।३।।

एक अरज है मेरी तुमसे जरा ध्यान से सुन लेना,
जनम जनम तक तेरी सेवा ''हर्ष'' भगत को दे देना,
श्री चरणों में तेरे दास का सांवलिये स्थान रहे ।।४ ।।

*(तर्ज : जीवन से भरी तेरी...)*

जख्मों से भरा मेरा सीना, मजबूर करे ''रोने के लिये''-२,
आँसु ये टपकते रहते हैं, मेरे श्याम का दर ''धोने के लिये''-२ ।।

मुझे धीर बंधाये ना कोई, ना कोई सुने दिल की बातें ऽऽऽ,
कैसे कान्हा कट पायेगी-२ इस तरह से गम की ''ये रातें' -२,
इक तड़पन है इस दिल के लिये,
इक चैन है बस ''खोने के लिये''-२ ।।

मैं चीर दिखाने आया हूँ, घावो को लगे जो सीने परऽऽऽ,
सीना छलनी हो जायेगा -२, इस दीन की बातें ''सुन सुन कर'-२,
हर सुबह मिली जलने के लिये,
हर शाम मिली ''रोने के लिये'' -२ ।।

दर्शन की उमीद है आँखो में, सीने में मिलन की व्याकुलता ऽऽऽ,
साँसो पे नाम तुम्हारा है-२, धड़कन मे बसी है ''आकुलता''-२,
किरपा का तेरा इक हाथ है बस,
इस ''हर्ष'' का गम ''धोने के लिये''-२ ।।





*(तर्ज : मांगने की आदत जाती नही...)*

जब जब तंगी, मे घिर जाऊँ,
क्या करना है, मैं समझ ना पाऊँ,
माँगने की नौबत जग से, आती नहीं,
तेरे होते लाज मेरी, जाती नहीं ।।

कभी कभी जीवन में बाबा ऐसी घड़ियाँ आती है,
सब कुछ मेरे पास है फिर भी इज्जत पे बन आती है,
तेरे दम पे इज्जत मेरी, जाती नही ।। १ ।।

कई दफा जब भी मैं कोई निश्चय ना कर पाता हूँ,
आँख मीचकर उस पल बाबा तेरा ध्यान लगाता हूँ,
तेरा साथ है तो चिंता, सताती नहीं ।। २ ।।

बड़े नाज से ''हर्ष'' दिवाना दुनिया को बतलाता है,
संकट आने के पहले मेरा श्याम धणी खुद आता है,
गम की आँधिया फिर मुझको, डराती नहीं ।। ३ ।।

*(तर्ज : जब हम सिमट के आपकी बाहों...)*

जब से मिला तु साँवरे, किस्मत सँवर गई,
मेरी अंधेरी जिन्दगी अब रोशन हो गई ।। टेर ।।

खेता रहा हूँ नाव मैं, पतवार के बिना,
जनमों-जनम का साँवरे, तेरा दास मैं बना,
तेरी दया से अब मेरी, हालत सुधर गई ।। १ ।।

खाता रहा हूँ ठोकरें, दर दर की मैं सदा,
हाथों को तूने थामके, चलना सिखा दिया,
तूने दिखाई राह तो, मंजिल ही मिल गई ।। २ ।।

कान्हा कभी ना छोड़ना, अब साथ तू मेरा,
यूँही सदा तू थामना, अब हाथ ये मेरा,
तेरी महर से ''हर्ष'' की, बगिया निखर गई ।। ३ ।।





*(तर्ज : दिल लूटनेवाले जादूगर...)*

जरा हंसके दिखादे ओ मोहन,
हम तुझको रिझाने आये हैं,
हम प्यार की कलियां चुन चुन कर,
चरणों में चढ़ाने आये हैं ।। टेर ।।

क्यूं रुठ के अब तुम बैठे हो, भगतों की बातें सुन सुन के,
हम प्यार की माला लाये है, अंसुओं के मोती बुनबुन के,
होले से, होले से जरा तू मुस्कादे, हम तुझको मनाने आये है ।।

कई रोज हुए हैं अब कान्हा, अमृत को घुले इन कानों में,
खो जाने को तेरी आये हैं, बंशी की मीठी तानों में,
प्यारी सी, प्यारी सी बजादे बांसुरिया, सुध बुध को भुलाने-आये है ।।

सब दुनिया वाले देख रहे, तेरी प्यार भरी इस मूरत को,
नैनों में बसाकर रखेगें, तेरी चांद सी प्यारी सूरत को,
तेरे ''हर्ष'' को, तेरे ''हर्ष'' को अब तू अपनाले,
तुझे अपना बनाने आये है ।।

*(तर्ज : जन्म कुण्डली देख के बोला... )*

जरा सोचकर मांगना प्यारे पल में ये सुन लेता है,
जिसकी जैसी चाहत हो उसे हाथों हाथ ये देता है ।। टेर ।।

कलिकाल में इसके जैसा, दूजा देव नही देखा,
जरा सोचने का फिर मौका, कभी किसी को ना देता,
अरजी लगते ही सेवक की, पीड़ा को हर लेता है ।।१।।

जिसने दरपे शोहरत मांगी, जग में वो मशहूर हुआ,
अगर भूल से आँसु मांगे, रोने को मजबूर हुआ,
बहुत सोचकर मांगो इससे, जो चाहो वो देता है ।।२।।

बात खतम होने से पहले, हर सेवक का काम करे,
'हर्ष' नहीं कोई कर सकता वो, खाटू वाला श्याम करे,
मुख से कहना नहीं जरूरी, आँखो को पढ़ लेता है ।।३।।





*(तर्ज : आये हो मेरी जिन्दगी में...)*

जादू सा कर दिया क्या बंशी बजाने वाले,
दिल को चुरा लिया है माखन चुराने वाले ।। टेर ।।

सूरत तेरी सलोनी मैं वारी वारी जाऊँ,
मेरे साँवले कन्हैया तुझको निहारी जाऊँ,
आँखो में बस गये हो नीन्दे उड़ाने वाले ।। १ ।।

तेरी बाँसुरी को सुनके मेरा अंग अंग डोले,
रस से भरी मुरलिया ऐ श्याम मिसरी घोले,
मधुबन में तुम न आना छल से नचाने वाले ।। २ ।।

तेरे छूने से खिला है हर रोम रोम मेरा,
पूनम के चान्द को ज्यूँ काली घटा ने घेरा,
ऐ ''हर्ष'' ना सताओ अपना बनाने वाले ।। ३ ।।

*(तर्ज : ओ राधा मेरी मुरली कहाँ खो गई...)*

जादूगारी जुलमी तेरी आँख रे,
टेढ़ो-टेढ़ो हमको रह्यो ताक रे ।। टेर ।।

नीले नीले झील से गहरे, कान्हा नैन तुम्हारे,
डूब मरे वो सेवक इनमे, एक नजर जो डारे ।। १ ।।

जबसे आँख मिली है तुमसे, सुध सारी बिसराई,
पहले खोया चैन जिया का, पीछे नीन्द गंवाई ।। २ ।।

दिल के मेरे पार हुआ है, इन नैनों का खँजर,
भरी सभा में लुट गया मै तो, देखो कैसा मँजर ।। ३ ।।

अधरों पे मुस्कान तुम्हारे, नैन करे हैं बाते,
''हर्ष'' कहे हम भगतों को तु, काहे ऐसे ताके ।। ४ ।।





*(तर्ज : साँची कहे तोहरे आवन से...)*

जो भी गया तेरे द्वारे पे उसके, पल मे भरे भण्डार तूने,
दीनों के दाता हारे के साथी, हमपे किये उपकार तूने ।।

संकट की घड़ियों ने जब भी सताया,
अपना पराया कोई काम न आया,
पलभर में आके, दुखड़े मिटाके,
बाबा किया चमत्कार तूने... ।। १ ।।

धंधे में जिसने भी ठोकर है खाई,
बंद हुई थी जिसकी सारी कमाई,
किस्मत बदल गई, हालत सुधर गई,
उसका चलाया व्यापार तूने... ।। २ ।।

खाटू की माटी को माथे लगाकर,
श्रृद्धा से चरणों मे शीश झुकाकर,
जिसने जो चाहा, उसने वो पाया,
''हर्ष'' किया ना इन्कार तूने... ।। ३ ।।

*(तर्ज : कोई हमदम ना रहा...)*

तुही हमदम है मेरा, तुही सहारा है मेरा,
तेरी किरपा जो रहे, तो ही गुजारा है मेरा ।। टेर ।।

गम जमाने ने दिये, क्या बताऊँ कितने -२,
गम मेरे पल में मिटादे, हो इशारा जो तेरा ।। १ ।।

श्याम सरकार है तु, तु है दया का सागर -२,
अब तो ये हो ही चुका है, मैं तुम्हारा तु मेरा ।। २ ।।

ये तेरा ''हर्ष'' सदा, गायेगा नगमें तेरे -२,
तु है पतवार मेरी, तुही किनारा है मेरा ।। ३ ।।





*(राग रचयिता : प्रवीन बेदी....मो.९८३०४३२६६९)*

तू है सेठों का सेठ बड़ा आला बनादे मुझे दिल्ली का लाला,
मेरा खुल जाये किस्मत का ताला,
बनादे मुझे दिल्ली का लाला ।। टेर ।।

लाला बनादे ओ लीले वाले, फिर ना पड़ेगें पैसों के लाले,
लाईन लगेगी गददी पे मेरी, किरपा रहेगी जो सेवक पे तेरी,
सदा रहना तु बनके रखवाला, बनादे मुझे दिल्ली का लाला ।।

दिल वाले रहते दिल्ली में बाबा, कहते हैं थोड़ा करते है ज्यादा,
दुनिया का क्या बस बातें बनाये, पर दिल्ली वाले करके दिखाये,
तेरा सेवक भी हो रूतबे वाला, बनादे मुझे दिल्ली का लाला ।।

छोले भटूरे पूड़ी कचौड़ी, धनिये की चटनी पालक पकोड़ी,
भल्ले दही के मैं भोग लगाऊँ, रबड़ी फलूदा जमके खिलाऊँ,
सोहन हलुवा चढ़ाऊँ घण्टे वाला, बनादे मुझे दिल्ली का लाला ।।

लाल ये तेरा लाला बनेगा, तेरी दया से मौज करेगा,
''हर्ष'' मुझे जग सेठ कहेगा, लेकिन मेरा सेठ तूही रहेगा,
मेरा जनमों का धो दे दिवाला, बनादे मुझे दिल्ली का लाला ।।

*(तर्ज : दम भर जो उधर मुँह फेरे...)*

तू मेहर जरा सी करदे ओ बाबाऽऽऽ,
ये बालक तर जायेगा, भव पार उतर जायेगा ।। टेर ।।

नाम तेरा सुन करके, मैं आया तेरे धाम,
लाज मेरी तेरे हाथों में, ''खाटू वाले श्याम''-२,ओ बाबा,
तू लाज मेरी भी बचाले, ओ बाबा ऽऽऽ,
ये बालक तर जायेगा... ।। १ ।।

मैं मूरख, कपटी लोभी, पूजा का नहीं है ज्ञान,
मस्तक टेक के दर पर तेरे, ''तुझको करुँ प्रणाम''-२,ओ बाबा,
तू शरण में मुझको ले ले, ओ बाबा ऽऽऽ,
ये बालक तर जायेगा... ।। २ ।।

तू देव बड़ा ही दयालु, है जग में तेरा नाम,
''हर्ष'' जो तुमको मन से ध्याये, ''बनते उसके काम''-२,ओ बाबा,
तू काम मेरा भी बनादे, ओ बाबा ऽऽऽ,
ये बालक तर जायेगा... ।। ३ ।।





*(तर्ज : तेरी दुनिया से दूर...)*

तेरा साँचा दरबार, लीले घोड़े के सवार, मेरी लाज रखना,
आया दुखड़ों से हार, बाबा सुनले पुकार, मेरी लाज रखना ।।

नैया मेरी डोले, ये खाये हिचकोले, क्या होगा रे बता,
आजा ओ कन्हैया, तु बनके खिवैया, ''बचाले रे जरा''-३,
मेरा छूटा घर बार, मै तो आया तेरे द्वार, मेरी लाज रखना ।।

कोई नही दूजा, तुम्हारे सिवा बाबा, जो दुखड़े हरे,
किसको दिखाऊँ, मै जख्मो को जाके, ''जो दिल पे लगे''-३,
मुझे तेरा ऐतबार, आके गम से उबार, मेरी लाज रखना ।।

आती है रूलाई, ना पड़ता सुझाई, बता मै क्या करूं
तूने जो बिसारा, तो किसका सहारा, ''ना जीऊँ ना मँरू''-३,
''हर्ष'' तेरा इन्तजार, मेरी बिगड़ी सुधार, मेरी लाज रखना ।।

*(तर्ज : तेरी मोर छड़ी के आगे...)*

तेरी खूब चली सरदारी, तेरी खूब चली सरदारी,
जय हो लीले के असवार, तेरी खूब चली सरदारी ।। टेर ।।

तेरो मकराणे को मंदर, तू बैठ्यो डट के अन्दर,
डयोढी पे अंजनी-लाल, तेरी खूब चली सरदारी ।। १ ।।

तेरो घर घर डंको बाजे, तेरे नाम पे दुनिया नाचे,
तेरो रूतबो बड़ो कमाल, तेरी खूब चली सरदारी ।। २ ।।

दुनिया जीने बिसरावे, बीने तू गले लगावे,
तू भगतां को रखपाल, तेरी खूब चली सरदारी ।। ३ ।।

फागण में लख दातारी, तेरो मेलो लागे भारी,
खाटू में उड़े गुलाल, तेरी खूब चली सरदारी ।। ४ ।।

जो ''हर्ष'' शरण में आयो, बो माल मोकलो पायो,
वो होग्यो मालामाल, तेरी खूब चली सरदारी ।। ५ ।।





*(तर्ज : दिल लूटने वाले...)*

तेरे भवन में कैसा जादू है, बिन डोर खिंचे सब आते हैं,
तन कर जो चलते दुनिया में, तेरे दर पे शीश झुकाते है ।।

चहुँ ओर तुम्हारा डंका है तू देव बड़ा ही बंका है,
तेरे एक इशारे पर बाबा दिवाने सुध बिसराते हैं ।।१।।

कितनों को जग में नाम मिला ऐ श्याम गुलामी में तेरी,
जो हार चुके दिल चौखट पे वो जीत का जश्न मनाते हैं ।।२।।

तेरे नाम की मस्ति बसती है नस नस में हमारी ओ दाता,
तेरे नाम से ही हम दीनों के सारे संकट टल जाते हैं ।।३।।

कोई धन से तुझको पा न सके छल बल से तुझे रिझा न सके,
जो ''हर्ष'' समर्पण करते हैं वो श्याम शरण पा जाते हैं ।।४।।

*(राग रचयिता : प्रवीन बेदी....मो.९८३०४३२६६९)*

तेरे दरबार मे आकर खुशी से फूल जाता हूँ,
बताने बात जो आऊँ वही मैं भूल जाता हूँ ।। टेर ।।

नजर भर देख कर कान्हा नजारे देख लेता हूँ,
तुझी में चान्द सूरज और सितारे देख लेता हूँ,
हजारों चोट पलभर में मैं दिल पे झेल जाता हूँ ।। १ ।।

खुदी को भूल बैठा हूँ दिवाना हो गया तेरा,
तुम्हारी लौ में जल जाऊँ बनुं परवाना मैं तेरा,
यही अरमान लेकर मैं हजारों मील आता हूँ ।। २ ।।

जुबां खामोश रहती है निगाहें बात करती हैं,
जुड़े ये हाथ वंदन में ये आँखे नाथ झरती हैं,
मै कोशिश लाख करता हूँ जुबां ना खोल पाता हूँ ।। ३ ।।

दया इतनी सी हो मुझपे सदा दरबार मैं आऊँ,
तेरी प्यारी सी चितवन में मेरे सरकार खो जाऊँ,
कहे ये ''हर्ष'' चरणों की तेरी जो धूल पाता हूँ ।। ४ ।।





*(तर्ज : रब करे मुझको भी प्यार हो जाये...)*

तेरे दर पे कान्हा, चमत्कार हो जाये,
मुझको भी तेरा, दीदार हो जाये ।। टेर ।।

तु मसीहा, प्यार का है, सारे जग मे शोर है,
मैं दिवाना बन गया हूँ, तुमसे बाँधी डोर है,
तेरी आँखो से ये आँखे, चार हो जाये ।।
मुझको भी... ।। १ ।।

बेसहारों, का सहारा, तुही तो दिलदार है,
मर मिटा हुँ दर पे तेरे, मुझको तुमसे प्यार है,
तेरी किरपा मुझपे, इक बार हो जाये ।।
मुझको भी... ।। २ ।।

मैं खड़ा हूँ, जिद पे मेरी, लौट कर ना जाऊँगा,
''हर्ष'' दर पे आ गया हूँ, तेरा दर्शन पाऊँगा,
तेरा मुझपे इतना, उपकार हो जाये ।।
मुझको भी... ।। ३ ।।

*(तर्ज : तुझे जीवन की डोर से...)*

तेरे चरणों में जीवन ये ''वार दिया है''-२
जैसे रखोगे तुम, रह लेगें हम
मैने सांवलिये तुझसे ''करार किया है''-२
दोगे खुशियाँ या गम सह लेगें हम ।। टेर ।।

इक सिवा तेरे दूजा ना भाया कोई,
मेरी नस - नस मे कान्हा समाया तुही,
ओरे मतवारे तूने युँ घायल किया-२,
तेरा हर इक सितम, सह लेगें हम... ।। १ ।।

तेरी चौखट का सेवक पुराना हूँ मैं,
तेरे चरणों का पागल दिवाना हूँ मैं,
तेरी मूरत को दिल में बसा के यूँही-२,
अब तो तेरी कसम, जी लेगें हम... ।। २ ।।

मेरे दिल पे कन्हैया तेरा जोर है,
तेरे हाथों में जीवन की ये डोर है,
तेरे चरणों का चेरा ये ''हर्ष'' हुआ-२,
तेरी चौखट पे दम, तोड़ेगें हम... ।। ३ ।।





*(तर्ज : थारी नौकरी सै परण्या...)*

थारी बाँसुरी सुण कान्हा म्हारो,
कालजो धड़क्यो रे ।। टेर ।।

पाणी की मटकी धर सिर पे, घर कानी मैं चाली
बीच बजारां पगल्या थमग्या, ना डोली ना हाली
बजी बाँसुरी जाणे जेवड़ो-२, पैरां में पड़ग्यो रे ।। १ ।।

दही बिलोवण बैठी थी मैं, भर माखन की झारी,
मीठी मीठी तान सुणी जद, भूली सुधबुध सारी,
काम भूलगी सगला मैं तो-२, जादू सो चढ़ग्यो रे ।। २ ।।

जाण एकली यो मरजाणो, बीच बजारां घेरी,
तान छेड़कर बोल्यो तन्ने, आज नचादँयु गोरी,
मुण्डे से बोली ना निकली-२, डूजो सो अड़ग्यो रे ।। ३ ।।

म्हें हाँ नार पराई कान्हा, तु म्हारे के लागे,
''हर्ष'' बावली सी हो जावां, ई मुरली के आगे,
लाज शरम को घूंघट म्हारो-२, सरक सरक सरक्यो रे ।। ४ ।।

*(तर्ज : बीरा बेगा थे तो...)*

थारो झुक झुक हुकम बजावाँ,
थारे चरणां शीश नवावाँ जी ।। टेर ।।

थारे स्वागत की तैयारी,
आओ थे श्याम बिहारी,
थारा मोकला लाड लडावाँ जी ।। १ ।।

हीरां को मुकुट बणायो,
सोने माहीं जड़वायो,
थाने प्रेम सुं आज पहरावाँ जी ।। २ ।।

फूलां की सजी है क्यारी,
थारे उत्सव की तैयारी,
थाने झूलो श्याम झुलावाँ जी ।। ३ ।।

थारो ''हर्ष'' भगत गुण गावे,
चरणां में अरज लगावे,
थारे स्वागत में बिछ जावाँ जी ।। ४ ।।





*(तर्ज : याद तेरी आई जणा..)*

दोहा : झूठी जग री प्रीत है, मतलब रो है प्यार ।
म्हाने तो बस साँवरा, थारो ही आधार ।।

थारो ही भरोसो मन्ने, थारो ही सहारो रे,
थारो दर छोड़ बाबा, मेरो ना गुजारो रे ।। टेर ।।

लाज भगत री थारे, आज लुट जावेली,
बेगा सम्भालो मेरी, सांस रूक जावेली,
बीच भँवर सुं नइया, पार उतारो रे ।। १ ।।

दुनिया का झूठा रिश्ता, हियो भरमावे रे,
दुख की घड़ी में कोई, काम कोन्या आवे रे,
दुखड़ा सुं थे ही म्हाने, सांवरा उबारो रे ।। २ ।।

''हर्ष'' भरोसो मेरो, टूटणे ना पावे जी,
रो रो भगत थाने, सांवरा बुलावे जी,
सुण्ल्यो भगत की बाबा, बेगा सा पधारो रे ।। ३ ।।

*(राग रचयिता : मुकेश बागड़ा)*

थारो सोणो सो सिणगार, थाने निरखां बारम्बार,
थारी, निजंरा उतारां साँवरा, थाँपे लूण राई वारां साँवरा ।।

शीश मुकुट हाथों मे मुरली, ''रूप सलूणो लागे''-२
कानां कुण्डल सोवे थारे, ''मस्तक टीको साजे''-२
थारे गल फूलां रो हार, थारो महक रह्यो दरबार,
थाने कदसूं निहारां सांवरा, म्हारी किस्मत संवारा सांवरा ।।

मोटी मोटी आख्याँ में सुरमो लगायो, ''होठां पे लाली लाल''-२
देख के म्हाने होले-होले मुल्के, ''भक्त हुआ रे निहाल''-२
हाथां बाजूबन्द सरकार, म्हारा लीले रा असवार,
थाँसू, अरजी गुजारां साँवरा, म्हाने, निरखो दुबारा साँवरा ।।

गल वैजन्ति हार सुहाणो, ''यो पंचरंगी बागो''-२
''हर्ष'' थारे भगतां ने बाबा, ''थे बनड़ा सा लागो''-२,
थारो रूतबो घणो अपार, थाँपे जावाँ म्हे बलिहार,
थारी, आरती उतारां साँवरा, थारा चरण पखारां सांवरा ।।





*(मुखड़ा : थोड़ा देता है या ज्यादा देता है...)*
*(अन्तरा : देता हरदम साँवरे..)*

थोड़ा ध्यायेगा पर ज्यादा पायेगा,
खाटू वाले की किरपा से मौज उड़ायेगा ।। टेर ।।

हर घड़ी ध्याओ मुझे ये श्याम ना बोले,
प्रेम से प्यारे जरा बस नाम तू ले ले,
भाव से ध्यायेगा तो भव तर जायेगा ।। १ ।।

जो भजे मन से उसी पर ध्यान देता है,
थोड़ा सा ये मांगता है ज्यादा देता है,
मन से ध्यायेगा तो घर भर जायेगा ।। २ ।।

मन लगा श्रद्धा दिखा ये दौड़ा आयेगा,
''हर्ष'' तेरा साथ ये हर पल निभायेगा,
प्रेम से ध्यायेगा तो इसको पायेगा ।। ३ ।।

*(तर्ज : ये धोखे प्यार के धोखे...)*

दरबार बड़ा ही अनोखा, भक्तों को लागे चोखा,
कोई चूक ना जाना मौका, कि हाथों में निशान ले चलो,
निशान खाटू धाम ले चलो ।। टेर ।।

फागुन का मेला आया, बाबा ने हमें बुलाया,
खाटू जाने का मोका आया,
कि हाथों में निशान ले चलो ।। १ ।।

रिंगस से पैदल जाना, जाकर के धोक लगाना,
जाके चरणों में झुक जाना,
कि हाथों में निशान ले चलो ।। २ ।।

बाबा का संदेशा आया, घर-घर में खुशियां लाया,
है सारी श्याम की माया,
कि हाथों में निशान ले चलो ।। ३ ।।

बाबा के दर पे जाना, और जाकर शीश झुकाना,
संग ''हर्ष'' को भी ले जाना,
कि हाथों में निशान ले चलो ।। ४ ।।





*(राग रचयिता : प्रवीन बेदी....मो.९८३०४३२६६९)*

दिल दिवाना था मेरा तनहा अकेले में,
मुझे कन्हैया मिल गया खाटू के मेले में ।। टेर ।।

तन्हाई में दिल मेरा घबराता था,
मुझको कोई अपना नजर न आता था,
मैं तो उलझा रहता था माया के झमेले में ।। १ ।।

हर पल अब वो साथ में मेरे रहता है,
सिर पर मेरे हाथ दया का रखता है,
अब मैं जीवन जीता हूँ मस्ती में रेले में ।। २ ।।

मुश्किल में जब कोई काम नहीं आया,
टूटे दिल को लेकर मैं खाटू आया,
''हर्ष'' श्याम सा साथी पा गया मै तो धेले में ।। ३ ।।

(तर्ज : मेरी बिगड़ी बनाने वाला...)

दीनों का पालन हारा, दुखियों का एक सहारा,
मेरा श्याम है, मेरा श्याम है, मेरा श्याम ही तो है ।। टेर ।।

इसके जैसा देव ना दूजा सारी दुनिया ध्याती है,
खाटू वाले श्याम के दर पे जाके शीश झुकाती है,
हारे का जो साथ निभाये, निर्बल की लाज बचाये ।।
मेरा श्याम है ... ।। १ ।।

कलीकाल का देव निराला मन इच्छा फल देता है,
बिन बोले ही निज सेवक की मंशा को पढ़ लेता है,
माझी जो बनकर आये, कश्ति को पार लगाये ।।
मेरा श्याम है ... ।। २ ।।

एक बार जो खाटू जाये बार बार वो जायेगा,
''हर्ष'' कहे चुम्बक सा प्यारे तुझको खींच बुलायेगा,
भटके को राह दिखाये, सिर पे जो हाथ फिराये ।।
मेरा श्याम है ... ।। ३ ।।





*(तर्ज : दिल दिवाने का डोला...)*

दुनिया से जो तू माँगे, तेरी शान जायेगी,
यारी तू निभाले श्याम से, तेरे काम आयेगी ।। टेर ।।

माया के बंधन तोड़ो, मेरे श्याम से नाता जोड़ो,
जग वाले कुछ ना देगें, झूठी आशायें छोड़ो,
तू हाथ पसारेगा तो, तेरी लाज जायेगी ।। १ ।।

जग को आसूँ दिखला के, तेरी इज्जत तू ना खोना,
जब दिल भर आये तेरा, तो श्याम के आगे रोना,
बड़ी जालिम है ये दुनिया, तेरी हँसी उड़ायेगी ।। २ ।।

कोई मजबूरी हो जाये, लोगों से कुछ न कहना,
तेरे दुखड़े ये हर लेगा, बस श्याम शरण आ जाना,
तेरे जीवन में फिर खुशियाँ, बेशुमार आयेगी ।। ३ ।।

तू भूल गया क्युँ इसको, तुझे इसने नहीं बिसारा,
अपने सेवक पे संकट, मेरे श्याम को नहीं गँवारा,
कहे ''हर्ष'' दुखों की कड़ियाँ, सब टूट जायेगी ।। ४ ।।

*(तर्ज : जाने वाले इक संदेशा)*

देख साँवरे सेवक पे कोई उंगली ना उठने पाये,
लाज के मारे कभी भी मेरी गर्दन ना झुकने पाये ।। टेर ।।

लाज अगर लुट जायेगी तो कहीं का ना रह पाऊगां,
बिन मारे ही मै तो बाबा जीते जी मर जाऊगां,
बदनामी की काली स्याही मुख पे ना लगने पाये ।। १ ।।

दीनानाथ कुहाता है तु दूजा ना तुम जैसा है,
लेकिन मैं माया का पुतला पाप ही मेरा पेशा है,
मक्कारों में मेरा कोई नाम नहीं लिखने पाये ।। २ ।।

बच्चा भूल करे तो शिकवा मात पिता को जायेगा,
''हर्ष'' भला फिर बदनामी से कैसे तु बच पायेगा,
मेरे कारण तेरा सीना छलनी ना होने पाये ।। ३ ।।





*(राग रचयिता : प्रवीन बेदी....मो॰९८३०४३२६६९)*

धूनी लगाई मैने कृष्णा के नाम की,
कृष्णा के नाम की राधा के श्याम की,
भज गोविन्दा भज गोपाला, मुरली मोहन नन्द का लाला ।।

होठों पे नाम तेरा, नैनों में श्याम मेरा,
हृदय के बीच बना, साँवलिये धाम तेरा,
रटना लगाई मैने कृष्णा के नाम की ।। १ ।।

ऐसी लगन लागी, दिल में अगन जागी,
तजके मैं काम सारे, होके मगन नाची,
बंशी बजाई मैंने कृष्णा के नाम की ।। २ ।।

माथे की बिन्दिया ये, हाथों का कंगना,
मेहन्दी रचाई तेरे, नाम की ओ कृष्णा,
चुनड़ी रंगाई मैंने कृष्णा के नाम की ।। ३ ।।

''हर्ष'' जलाई तूने, कैसी ये ज्वाला,
मन में हुआ है मेरे, अद्‌भुत उजाला,
ज्योति जलाई मैंने कृष्णा के नाम की ।। ४ ।।

*(तर्ज : दो हँसों का जोड़ा...)*

नन्द लालो यो मैया बिगड़ गयो रे,
मेरी मटकी को माखन सबड़ गयो रे ।। टेर ।।

कल रात चुपके से घर मेरे आया,
छीकें से जुल्मी ने माखन चुराया,
हाथ पकड़ी तो-२, बैरी अकड़ गयो रे ।। १ ।।

गुस्से में मोहन को मैने माँ डाँटा,
घर में क्या तेरे है माखन का घाटा,
नाक चौखट पे-२, मेरी रगड़ गयो रे ।। २ ।।

मैं बोली चोरी से माखन क्यूँ खावे,
मांगे से दे दूँगी तू जितनो चावे,
बात सुनके वो-२, मेरी उखड़ गयो रे ।। ३ ।।

गुजरी ना इतरा तू माखन पे तेरे,
नदियाँ बहे घर में मैया के मेरे,
''हर्ष'' फोकट में-२, मोसे झगड़ गयो रे ।। ४ ।।





*(राग रचयिता : राजू मेहरा मो॰ ०९४३३०८०१७८)*

नाचे झूम झूम के सेवक, खाटूजी के मंदिर में,
गाये श्याम का गुणगान, धरके बाबाजी का ध्यान,
जयकार लगाये मंदिर मेऽऽऽ, खाटू जी के मंदिर में ।।
खाटू का श्याम बाबा, भक्तों का मीत है,
हारे का साथी है ये, भक्तों से प्रीत है,
जब ये देने पर आ जाये, लेने वाला थाम ना पाये,
भण्डार भरे ये पल भर मेऽऽऽ, खाटू जी के मंदिर में ।। १ ।।
होली का मौसम आये, गालों पे रंग लगाये,
भक्तों के टोले आकर, मस्ती में नाचे गाये,
लिए हाथों में गुलाल, मले सबके ये गाल,
पिचकारी छुड़ाये भर भर केऽऽऽ, खाटू जी के मंदिर में ।। २ ।।
कलयुग का देव निराला, भक्तों का है रखवाला,
जाये जो मंशा लेकर, उसका हर काम निकाला,
जो भी जाता इसके द्वार, करता उसका बेड़ा पार,
भव पार लगाये क्षण भर मेऽऽऽ, खाटू जी के मंदिर में ।। ३ ।।
रिंगस से पैदल चलके, इनका निशान लाते,
बाबा से मिलने का ये, दिल में अरमान लाते,
''हर्ष'' हाथों में निशान, गूंजे धरती आसमान,
निशान चढ़ाये मंदिर मेऽऽऽ, खाटू जी के मंदिर में ।। ४ ।।

*(धमाल) (श्याम जयन्ति)*

नाचे श्याम का दिवाना श्याम जयन्ति आई रे
गांव गांव और गली गली मे ख़ुशियाँ छाई रे ।। टेर ।।

कार्तिक शुक्ला ग्यारस के दिन श्याम धणी अवतार लियो,
आज खुशी सुं नाच रह्या है लोग लुगाई रे ।।१।।

घर घर माही श्याम धणी का उत्सव होवण लाग्या जी,
बाँट रह्या है सेवक मिलके आज बधाई रे ।।२।।

पलक बिछायाँ बैठ्या सगला श्याम धणी के स्वागत में,
भजन भाव की गंगा जमना खूब बहाई रे ।।३।।

श्याम दिवाना इक दूजे ने हँस हँस गले लगावे जी,
भगतां उपर ''हर्ष'' श्याम की मस्ती छाई रे ।।४।।





*(मुखड़ा : अंग्रेजी में कहते है कि...*
*अन्तरा : बोलो जी बोलो...)*

नाती रिश्तेदारों ने मुँह मोड़ लिया था,
अपनों ने भी संकट में जब छोड़ दिया था,
बदहाली में जीता था, नहीं कोई भी सुख मैं पाया,
पर जो तेरे दरपे आया SSS,मेरे तो SSS
मेरे तो भाग जगे, मेरे दुख दूर हुए, कि बल्ले बल्ले हो गई रे,
ओ बाबा हो SSS ।।

आज तलक ना जाने मैने कितनी ठोकर खाई,
लीले वाले श्याम तुम्हारी बहुत बड़ी सकलाई ।।१।।

तेरा साथ मिला तो पीछे मुड़के कभी ना देखा,
हाथ फिराके सिरपे तूने बदली किस्मत रेखा ।।२।।

साँझ सबेरे अबतो बाबा तेरे ही गुण गाऊँ,
तुमसा दूजा देव नहीं है दुनिया को बतलाऊँ ।।३।।

''हर्ष'' कहे तेरी किरपा से चलता खूब गुजारा,
मिलता रहे हमेशा बाबा आर्शीवाद तुम्हारा ।।४।।

*(तर्ज : जारे कारे बादरा-२...)*

नीली पीली पागड़ी - नीली पीली पागड़ी,
मेरे कन्हैया के शीश सजे ।। टेर ।।

मोटे मोटे नैनों में कजरा है कारा,
मुख तेरा चन्दा सा रूप बड़ा प्यारा,
हाथो में प्यारी सी मुरली सजे ।। १ ।।

काली काली नागिन सी लट घुँघराली,
माथे पे तिलक सोहे होठो पे है लाली,
कानों में कुण्डल नगीने जड़े ।। २ ।।

हाथों में है कंगन गले में सोहे कण्ठा,
पीली सी पिताम्बर पे सज रहा फेंटा,
सोणा सलोना तु ''हर्ष'' लगे ।। ३ ।।





*(तर्ज : बचपन की मोहब्बत...)*

परदे मे छुपा बैठा, क्युँ लाज न आई रे
बदनाम दया होगी, आ करले सुनाई रे ।। टेर ।।

मैंने तो सुना तुही, बिगड़ी को बनाता है,
भगतों की नैया को, तुही पार लगाता है,
परदे से निकल कर आ, क्युँ आँख चुराई रे ।। १ ।।

घर तूने बिदुर के क्युँ, छिलकों को चबाया था,
क्युँ छीन सुदामा के, तन्दुल तु खाया था,
क्युँ आके पाँचाली की, तुने लाज बचाई रे ।। २ ।।

क्या इतना समझ लुँ मै, सब किस्से कहानी है,
या देर से आने की, तेरी रीत पुरानी है,
तेरे ''हर्ष'' को ओ कान्हा, ना और समाई रे ।। ३ ।।

*(राग रचयिता : प्रवीन बेदी....मो.९८३०४३२६६९)*

परियों जैसा रूप देख कान्हा का मनवा खिल गया,
राधा का जादू चल गया राधा का जादू चल गया ।। टेर ।।

ये भोला मासूम सा चेहरा, उस पर तेरे गोरे गाल,
जिसने ऐसा रूप रचाया, उस मालिक ने किया कमाल,
होले से मुस्काना तेरा साँवरिये को छल गया ।। १ ।।

पानी भरने ओ पनहारन, पनघट पे जो तू आई,
रस्ते में घनश्याम खड़ा था, नजरें उससे टकराई,
नैनो के खँजर से तूने कान्हा को घायल किया ।। २ ।।

होश हवास भुलाये सारे, गाय चराना भूल गया,
राधे तुझमे ऐसा खोया, बंशी बजाना भूल गया,
'हर्ष' कहे जनमों का साथी आज श्याम को मिल गया ।। ३ ।।





*(तर्ज : मेरा रंग दे बसन्ती चोला...)*

प्यारे भजले तू श्याम रंगीला, प्यारे भजले ।। टेर ।।

बाबा को भज श्याम बहादुर, अमर हुए संसार में,
इन्हे पूज कर आलूसिंह जी , तर गये हैं भव पार से,
आज इन्हीं को ध्याने निकला, हम भक्तों का टोला ।।

भक्त शिरोमणी काशीराम जी, ने पूजा श्री श्याम को,
शिवचरण जी भीमराजका, ने पाया घनश्याम को,
महिमा गा गोपाल भाटिया, ने भी अमृत घोला ।।

शांति बाई बन गई देखो, श्याम चरण की दीवानी,
कलयुग की मीरा बन बैठी, कमला बाई कंकानी,
बनवारी घर-घर में पहुंचा, ले भजनों का झोला ।।

कलिकाल में श्याम प्रभु का, वास हुआ खाटूधाम में,
लीले घोड़े वाले का, गुणगान हुआ ब्रह्माण्ड में,
नन्दूजी ने भी पहना है, श्याम नाम का चोला ।।

सूरजगढ़ की ध्वजा फहरती, मंदिर पे पूरे साल है,
फागुन में जब मेला भरता, उड़ता रंग गुलाल है,
''हर्ष'' कहे तुम आज रिझालो, बाबा है अलबेला ।।

*(तर्ज : अगर तुम मिल जाओ जमाना...)*

प्रेम से भावों से कन्हैया तोल देगें हम,
तेरे स्वागत में दरवाजा ये दिल का खोल देगें हम ।। टेर ।।

बड़े ही चाव से हमने हमारा घर सजाया है,
तेरे आने की खुशियों में तेरा किर्तन कराया है,
तेरे भजनों में मिसरी सी-२, कन्हैया घोल देगें हम ।। १ ।।

तेरी प्यारी सी चितवन को कन्हैया हम भी देखेगें,
तेरे इन पावन चरणों से लिपट कर हम भी देखेगें,
छुपी है दिल में जो बातें-२, वो तुमसे बोल देगें हम ।। २ ।।

तेरे इस ''हर्ष'' की आशा कन्हैया तोड़ ना देना,
बड़ी उम्मीद लाया हूँ युँ वापस मोड़ ना देना,
तू आजा प्यार का तोहफा-२, बड़ा अनमोल देगें हम ।। ३ ।।





*(तर्ज : मेरे टूटे हुए दिल से...)*

बड़ा मायुस हुँ बाबा, तुम्हारी याद में तेरा, दिवाना रो रहा है,
बता निष्ठुर क्युँ बन बैठा, मेरा कुछ हाल ना पूछा,
कहाँ तु सो रहा है ।। टेर ।।

अँखियाँ ये दर्शन की प्यासी, तुम बिन चारों ओर उदासी,
महर नजर कर आज जरा सी,
तेरे चरणों को अंसुअन से, तेरा इक बावला बेटा,
कन्हैया धो रहा है ।। १ ।।

जब से मैने तुमको चाहा, जाने कैसा रोग लगाया,
इक पल भी मैं सो नही पाया,
बिना देखे ना रह पाऊँ, ना जागु ना मैं सो पाऊँ,
मुझे क्या हो रहा है ।। २ ।।

दीन दयालु अब तो आजा, इन नैनों की प्यास बुझा जा,
''हर्ष'' तु आके धीर बंधा जा,
तेरी दिवानगी का गम, अरे ओ सांवरे तेरा,
दिवाना ढ़ो रहा है ।। ३ ।।

*(तर्ज : हाल क्या है दिलों का....)*

बड़ी मुद्दत से आये हो घर में मेरे,
श्याम वापस युँ जाने की जिद ना करो,
जा रहे हो तो जाओ ना रोकेगें हम,
फिर से आने का भगतों से वादा करो ।। टेर ।।

इक जमाने से तुझको पुकारा किये,
सुनके तुमने किया अनसुना सांवरे,
अब तो सुननी पड़ेगी हमारी तुम्हे,
अपने बच्चों की बातों पे ध्यान धरो ।। १ ।।

क्या खता है बता तेरे बेटों की तू,
तेरी यादों में बैठे थे खोये हुए,
आह भरते रहे हम सिसकते रहे,
रूसवा बेटो से खुद को न कान्हा करो ।। २ ।।

तेरे वादे पे हमको है पूरा यकीं,
''हर्ष'' करके कभी तु मुकरता नही,
दिल में ठण्डक पड़े सेवकों के तेरे,
अपने भगतों की चिन्ता को अब तो हरो ।। ३ ।।





***''श्याम की लाडली''***

*(तर्ज : देना हो तो दीजिये...)*

बाबा तेरी लाडली हुई सोलह सवाई है,
वर ढूंढो तुम तो आकर अब करनी सगाई है ।। टेर ।।

बड़े प्यार से पाला मैंने बड़ा ही लाड लड़ाया है,
शिक्षा दीक्षा संस्कार सेवा में तेरी लगाया है,
तेरी गोद में पलकर बाबा ये पढ़ लिख पाई है ।। १ ।।

मेरी बेटी तेरी दुलारी हो गई आज सयानी है,
पीले हाथ करो अब इसके चुनड़ी इसे उढ़ानी है,
इसको जोड़े में सजाकर अब करनी बिदाई है।। २।।

कौन सा घर कैसा है लड़का तुमसे ना कुछ छानी है,
जो हो इसके लायक बाबा उस घर बात चलानी है,
लो आज सम्भालो टिपणी ये तेरी लिखाई है।। ३ ।।

## (२)

नीन्द न आवे पिता को जिसके घर में बेटी कुँआरी है,
कैसा होगा घर वर उसका सोचे माता बिचारी है,
इसको डोली में बिठाकर अब करनी पराई है ।। ४ ।।

तेरी दया से ऐसा वर हो जिस पर हाथ तुम्हारा हो,
घर हो ऐसा जिसमें बाबा हर पल वास तुम्हारा हो,
ऐसा कुछ कर दे बाबा छुपी जिसमें भलाई है ।। ५ ।।

शीश का दान दिया है तुमने इक कन्या का दान करो,
कन्या दान सा पुण्य नहीं है बाबा मेरी बात सुनो ,
ये पुण्य कमालो बाबा ये मेरी कमाई है।। ६ ।।

मन लगा श्रद्धा दिखा मैं दौड़ा आऊँगा ।
''हर्ष'' तेरा साथ मैं हर पल निभाऊँगा ।।





*(धमाल)*

बाबा नाचण दे तेरे भगतां ने तेरो खूब सज्यो दरबार,
सिंघासन पर सजकर बैठ्यो लीले को असवार ।। टेर ।।

रूप सलूणो तेरो कान्हा मनड़ो घणो लुभावे रे,
ताल सुं ताल मिलासी म्हारे घुंघरू की झणकार ।।१।।

युँ लागे ज्युँ आज खड़्या हाँ खाटू मंदिर माही रे,
आज भले ही टूट ही जावे इकतारे को तार ।।२।।

सम्मोहन कर दीन्हों म्हापर रूप तेरो मतवारो रे,
देख तेरे दरबार में तेरे भगतां की भरमार ।।३।।

''हर्ष'' नजर ना लग जावे जी लूण राई वारो रे,
तेरे रोक्याँ आज रुके ना सेवकिया सरकार ।।४।।

***(धमाल)***

बाबा श्याम का निशान उड़े रे असमान,
बेगो सो तू चाल बावला के सोचे नादान ।। टेर ।।

चारूं कानी रंग रंगीली श्याम ध्वजा लहरावे जी
श्याम धणी के दरसन तांई चाल्यो सकल जहान ।। १ ।।

पगां उघाणा चाले कोई कोई पेट पिलाणी जी
बड़ा-बडेरा सागे चाले टाबरिया नादान ।। २ ।।

मस्त होयकर सगला नाचे चंग मजीरा बाजे जी
भजनां को रसपान करे जी सगला एक समान ।। ३ ।।

''हर्ष'' श्याम का जै जै कारा आकाशा में गूँजे जी
फागण के मेले की भगतो याही एक पिछाण ।। ४ ।।





*(तर्ज - मोरिया)*

भायलो, हेलो लगावे देखो ''साँवरो''-३,
चालो चालो रे-३, मेले के मांही आज भायलो,
हेलो लगावे देखो साँवरो ।। टेर ।।

भायलो, फागण को मेलो भर्‌यो जोर को,
लेल्यो लेल्यो रे-३, हाथां में थे निशान भायलो,
हेलो लगावे देखो साँवरो... ।। १ ।।

भायलो, खाटू में जाके होली खेलस्याँ,
भरल्यो भरल्यो रे-३, झोली में रंग गुलाल भायलो,
हेलो लगावे देखो साँवरो... ।। २ ।।

भायलो, ढफली-मजीरा चंग बाजर्‌या,
घालो घालो रे-३, खाटू में घूमर जाय भायलो,
हेलो लगावे देखो साँवरो... ।। ३ ।।

भायलो, ''हर्ष'' भगत ने मतना भूलज्यो,
उठे उठे रे-३, हिवड़े में म्हारे हूक भायलो,
हेलो लगावे देखो साँवरो... ।। ४ ।।

*(धमाल) (छेड़छाड़)*

मतना मारो जी मुरारी म्हापे रंग कि पिचकारी,
रस्तो छोड़ो रीस करेगी नणदल रामारी ।। टेर ।।

नई नवेली गूजरी मैं आज बिरज में आई जी,
दोराणी जिठाणी म्हासुं लड़सी जी भारी ।। १ ।।

सखी सहेल्याँ आगे चलगी पण मैं रहगी लारे जी,
रस्तो भूल गई सांवरिया मैं तो बेचारी ।। २ ।।

बालमड़ो मेरो आँख दिखावे जेठ मनै धमकासी जी,
सासु सुसरो ताना देसी म्हाने गिरधारी ।। ३ ।।

पिचकारी सुं तन थे रंगस्यो ''हर्ष'' गूजरी बोले जी,
रोम रोम मेरो रंग्यो पड़यो है थासुं बनवारी ।। ४ ।।





*(तर्ज : लागे वृन्दावन नीको)*

मंदरियो प्यारो प्यारो लागे, बाबा थारो
मंदरियो प्यारो लागे ।। टेर ।।

ऊँचे सिंहासन आप बिराजो, मोर मुकुट सिर साजे ।
बाबा थारो ... ।। १ ।।

मकराणे को बण्यो है देवरो, मोर पपीहो नाचे ।।
बाबा थारो ... ।। २ ।।

केशर टीको मस्तक सोवे,काना कुण्डल साजे ।
बाबा थारो ... ।। ३ ।।

गोपीनाथ जी को माय बसेरो, हनुमत डयोढ़ी आगे ।।
बाबा थारो ... ।। ४ ।।

''हर्ष'' दिवानो शीश झुकावे, श्याम धणी थारे आगे ।
बाबा थारो ... ।। ५ ।।

*(तर्ज : बोल राधा बोल संगम...)*

माखन खाने आया मैं ग्वाला गोकुल धाम का,
बोल राधा बोल माखन दोगी कि नहीं ?

वृंदावन से चलकर आया आज तेरे बरसाणे में,
ज्यादा मीठा लागे माखन हाथों से तेरे खाने में,
याचक पर क्या फिर से किरपा होगी कि नहीं ?

जिसको तूने मथ के निकाला वो माखन मतवाला है,
प्रेम की भिक्षा मांग रहा है आज कोई दिलवाला है,
बिना लिये जो चल जाये मैं जोगी वो नहीं ?

तुझसे मिलने आया राधे माखन एक बहाना है,
''हर्ष'' तेरी डयोढ़ी पर बैठा तेरा एक दिवाना है,
दिवाने की आज खबरिया लोगी कि नहीं ?





*(तर्ज : दिल्ले गेड़ा...)*

मारा मारा फिरे क्युँ भगत बावरा,
दुखड़े हरेगा खाटूवाला साँवरा ।। टेर ।।

कोई नहीं साँवरे का सानी जग में,
झोलियाँ भरेगा मेरा दानी पल में,
चरणों में आके जरा सर को झुका ।। १ ।।

दिल से जो अरजी लगाई जिसने,
पल में ही करली सुनाई इसने,
हाथों को पसार के तु अरजी लगा ।। २ ।।

जिस पल श्याम की शरण आयेगा,
''हर्ष'' नसीबा तेरा खुल जायेगा,
श्याम के दिवाने जरा श्याम को रिझा ।। ३ ।।

*(धमाल) (शिकायत)*

मारी कांकरी कान्हुड़ो मटकी फोड़ दीन्ही माँ,
मैं बरजी तो पकड़ आंगली मोड़ दीन्ही माँ ।। टेर ।।

पाणी भरके आँवती को गेलो मैया रोक्यो ऐ,
हाथ तेरे जुलमी के आगे जोड़ दीन्ही माँ ।। १ ।।

लाखां मिन्नत कीन्ही मैया एक ना मेरी मानी ऐ,
हाल मेरो बेहाल बणाकर छोड़ दीन्ही माँ ।। २ ।।

मटकी उपर मटकी मैया आँख में ऐकें खटकी ऐ,
चार चार मटकी मरजाणो तोड़ दीन्ही माँ ।। ३ ।।

कब्जो भीज्यो चोली भीजी भीज गई माँ साड़ी ऐ,
''हर्ष'' ओढ़णी खेंच निगोड़ो ओढ़ लीन्ही माँ ।। ४ ।।





*(धमाल) (सिणगार)*

मुख सुं बोल दे सांवरिया तन्ने कुण सजायो रे,
देख तेरे सिणगार ने चन्दा भी शरमायो रे ।। टेर ।।

मोर मुकुट कानां में कुण्डल गल बैजन्ती सोवे रे,
केशरिया टीको माथे पर खूब लगायो रे ।। १ ।।

बाजुबन्द बड़ा ही सोणा हाथ मे कंगन खनके रे,
तु चितचोर चुराके मनड़ो क्युँ मुस्कायो रे ।। २ ।।

पीत वसन पर फैंटो सोवे होठां मुरली प्यारी रे,
जादुगारो रूप निरख मनड़ो हर्षायो रे ।। ३ ।।

नजर सांवरा लग ना जावे ''हर्ष'' बड़ो घबरावे रे,
याही सोचकर कालो टीको आज लगायो रे ।। ४ ।।

*(राग रचयिता : प्रवीन बेदी....मो.९८३०४३२६६९)*

मुझे सोना भी दे मुझे चाँदी भी दे,
तेरी भगती भी दे मेरे साँवरे ।। टेर ।।

हीरे या पन्ने माणक या मोती, इनकी जरूरत सबको है होती,
धन की चमक से दुनिया पसीजे, पैसे बिना तेरा पण्डित ना रीझे,
मुझे गाड़ी तु दे, बंगला बाड़ी तु दे, मुझे नगदी भी दे मेरे साँवरे ।।

ग्यारस को तेरे दर्शन को आऊँ, संग में तुम्हारे भगतो को लाऊँ,
तेरा भण्डारा चलता रहेगा, मेरा गुजारा चलता रहेगा,
जब भी दिल हो मेरा, पाऊँ दर्शन तेरा, ऐसी युक्ति तु दे मेरे साँवरे ।।

शायद कमी हो चाहत में मेरी, लेकिन कमी ना हो देने मे तेरी,
बेटा समझ के सब कुछ तु देना, कोई कमी मेरे जीवन में हो ना,
मेरी बात रहे, तेरा साथ रहे, दुख से मुक्ति तु दे मेरे साँवरे ।।

जीवन चलाने को धन की जरूरत, भव से उतरने को भगती की चाहत,
दर पे पड़ा हूँ तेरे सहारे, ''हर्ष'' खड़ा हूँ बाहें पसारे,
मेरा सर जो झुके, तेरे आगे झुके, मुझे शक्ति तु दे मेरे साँवरे ।।





*(राग रचयिता : दामोदर शर्मा)*

मुझे पता चला है श्याम, आज यहाँ आयेगें,
चान्दी सोना हीरे मोती, धन बरसायेगें ।। टेर ।।

सब भगतों को बोल के रखना,
दरवाजों को खोल के रखना,
खाटूधाम से आज श्यामजी, चलकर आयेगें ।। १ ।।

श्याम के चरणों में झुक जाना,
दिल का सारा हाल सुनाना,
बेटों की अटकी नैया को, पार लगायेगें ।। २ ।।

खुशियों से घर भर जायेगा,
जो चाहेगा वो पायेगा,
रहमत भरा खजाना बाबा, आज लुटायेगें ।। ३ ।।

जिसके कर्म रहेगें जैसे,
फल देगें बाबा उसे वैसे,
''हर्ष'' कहे भगतों को सच्चा, न्याय चुकायेगें ।। ४ ।।

*(तर्ज : तुझे सूरज कहुं या चन्दा...)*

मुझे धूल बनाकर रखले, चरणों में श्याम तुम्हारे,
तेरा दास खड़ा है कबसे, दरपे तेरे हाथ पसारे ।। टेर ।।

मैं गीत तुम्हारे गाऊँ, बन करके तेरा दिवाना,
आवाज को मेरे दिल की, क्या तूने नही पहचाना,
तुझमें ही मैं खोया रहता, सांवरिये साँझ सखारे ।।१।।

ऐ श्याम शरण में तेरी, पापी चाहे अधमी आये,
चरणों की धूल से तेरी, भवसागर वो तर जाये,
तु महर नजर से बाबा, कितनों को पार उतारे ।।२।।

मै चरण तेरे छू पाऊँ, इतनी सी आस पुरादे,
तेरे ''हर्ष'' भगत को बाबा, इस लायक आज बनादे,
तेरा दास तेरे चरणों में, बस येही अरज गुजारे ।।३।।





*(तर्ज : जिसको तेरा भरोसा...)*

मुझे रास आ गया है, ग्यारस को खाटू आना,
युँही प्यार से हमेशा, मुझे साँवरे बुलाना ।। टेर ।।

ग्यारस का अब तो बाबा, मुझे इंतजार होता,
यादों में तेरी तडपुं, ना जागुं ना ही सोता,
अब तक निभाया तूने, आगे भी तु निभाना ।। १ ।।

जब तक चलेगी साँसे, सुमिरन करुगां तेरा,
गुणगान तेरा गाऊँ, वंदन करुगां तेरा,
दुनिया मुझे बुलाये, कह कर तेरा दिवाना ।। २ ।।

तेरे दिल को मैं जो भाया, ये है खुशनसीबी मेरी,
मीलों हुई है मुझसे, अब बदनसीबी मेरी,
तेरा ''हर्ष'' युँही चाहे, चरणों में बस ठिकाना ।। ३ ।।

*(तर्ज : सेठो की क्या करे नोकरी...)*

मेट दिये भगतों के संकट तूने बात ही बात में,
लीले वाले लहराई जब मोर छड़ी तेरे हाथ में ।। टेर ।।

उजड़े हुए घरों को बाबा, ''मोरछड़ी ने बसा डाला''-२,
रोता हुआ जो दरपे आया ''पलमे उसे हँसा-डाला''-२,
जीवन भर वो फिर ना रोया, सांझ-सुबह दिन-रात में ।।

कोशिश करके भी कितनों की, 'विपदा नहीं मिटी जग में'-२,
मोर छड़ी के इक झाड़े ने, ''काम बना डाला पल मे''-२,
बाल ना बाँका कर न सके चाहे, बैठा हो दुश्मन घात में ।।

''हर्ष'' धनुष है राम के हाथों ''कृष्ण सुदर्शन धारी है''-२,
शंकर ले त्रिशूल खड़े है, ''शक्ति लिये कटारी है''-२,
जान गये हम क्यूं रखते हो, मोर छड़ी तुम साथ में ।।





*(तर्ज : मेरे पिया गये रंगून...)*

मेरा जिया जले दिन रैन, ओ कान्हा रिमझिम बरसे नैन,
तुम्हारी याद सताती है, हमे रह रह के रुलाती है ।। टेर ।।

अब श्याम तुम्हारे बिन तो ''रह ना पायें''-२,
तेरी याद तुम्हारे भगतों को तड़पाये, हाँ तड़पाये,
हम छोड़ के इकपल रह ना पायें कान्हा तेरा साथ ।। १ ।।

ऐ श्याम भला तू हमको क्यूं तरसाये ''हाय तरसाये''-२,
अब सिवा तुम्हारे हमको कुछ ना भाये, कुछ ना भाये,
हम भटक कहीं ना जायें बाबा आकर पकड़ो हाथ ।। २ ।।

हमे भूख प्यास ना लागे श्याम सलोने, ''श्याम सलोने''-२,
तेरा ''हर्ष'' विरह में आज लगा है रोने, बाबा रोने,
मेरा जिया बड़ा भरमाये बाबा क्या दिन और क्या रात ।। ३ ।।

*(तर्ज : मेरी जान ले ले गई ये कुरती मल-मल की...)*

दोहा : होंठ सजे है मुरली प्यारी, गल बैजन्ति माला ।
आज से पहले कभी ना देखा, ऐसा रूप निराला ।।

मेरा चैन-२, लै लै गई ये सूरत भोली सी,
तेरे गाल गुलाबी, तेरी चाल नवाबी, चली दिल पे गोली सी,
बेचैन-२, मुझे कर गई, ये सूरत भोली सी ।। टेर ।।

तेरे अधरों पे मुरली सोहे, तेरे भगतों का मनवा मोहे,
तेरे मुखड़े पे तेज निराला, सोहे गले में वैजन्ति माला,
तेरी तिरछी अदायें, बैरी जादू सा चलाये,
करे मुझसे ठिठोली सी, बेचैन-२,... ।। १ ।।

तेरे गेसु बड़े घुँघराले, तेरे नैना है मय के प्याले,
मेरा दिल करे तकता ही जाऊँ, तेरे रूप का रस पी जाऊँ,
करे भगतों से बातें, तेरी नीली नीली आँखे,
कँचे की गोली सी, बेचैन-२,... ।। २ ।।

तेरी एक झलक मिल जाये, तेरे ''हर्ष'' का मन खिल जाये,
तेरे रूप पे वारी वारी जाऊँ, तेरे चरणों में सर को झुकाऊँ,
मेरे रंगीले बिहारी, लागे छवि ये तुम्हारी,
रंगो की रंगोली सी, बेचैन-२,... ।। ३ ।।





*(तर्ज : कजरारे कजरारे...)*

दोहा : नजरे उठाके देखा, इस पूनम के चान्द को ।
हमने कलेजा दे दिया, राधा के श्याम को ।।

मेरा श्याम आज युँ संवरा, मुख से नजर हटे ना,
जी चाहता है कान्हा, तुझे देखते ही रहना,
हो SSS चान्द शरमाये, ओ कान्हा तेरे आगे -२,
बड़ा सोणा, बड़ा सोणा, बड़ा सोणा सोणा लागे,
मेरा कान्हा, मेरा कान्हा, बड़ा सोणा - सोणा लागे ।।

काली काली सुरमई आँखे, गालों पे गुलाबी छाई है,
मेरे नखराले कान्हा के, चेहरे पे नवाबी छाई है,
तेरे मुख से निगाहें हटती नहीं,
तुझे छोड़ किसी पे ये टिकती नहीं,
हो SSS चान्द शरमाये... ।। १ ।।

## ( २ )

नैनों से तु वार करता है, हमको बेकरार करता है,
रूप का ये खंजर सांवरा, दिल के मेरे पार करता है,
तेरे हाथों में मुरलिया साजे है,
तेरे पावों में पैजनिया बाजे है,
हो ऽऽऽ चान्द शरमाये... ।। २ ।।

प्यारा सा सिंगार ये तेरा, मानो कि बहार आई है,
गालों पे गेसु की लटकन, ''हर्ष'' क्या निखार लाई है,
तन पीली पिताम्बर सोहे है,
तेरे रूप में सेवक खोये हैं,
हो ऽऽऽ चान्द शरमाये... ।। ३ ।।

बड़ा ही खूबसूरत सा मुझे इनाम मिला,
आँख के एक इशारे से तुमने थाम लिया।
शुक्रिया कैसे करुँ अदा बता ऐ नटवर,
तेरे इस ''हर्ष'' पे जादू तूने घनश्याम किया ।।





*(तर्ज : मिल्यो डगल खोर...)*

मेरा लड़्या रे श्याम सुं नैण, बावली बणी मै फिरुँ ।। टेर ।।

गाय चरावण जातो छैलो, मुरली होंठ लगाई,
कैसो जादू करग्यो बैरी-२, सुध सारी बिसराई रे,
बावली बणी मैं... ।। १ ।।

आडी टेडी चाल श्याम की, तिरछी नैण कटारी,
ऐसो सोणो रूप देख कर-२, काया खिलगी म्हारी रे,
बावली बणी मैं... ।। २ ।।

सोऊँ तो मन्ने नीन्द ना आवे, जागुं रात्यु सारी,
चैन चुराके सुख सुं सोवे-२, रसियो छैल बिहारी रे,
बावली बणी मैं... ।। ३ ।।

सखी सहेल्याँ बोली ई सुं, बचके रहिये गोरी,
''हर्ष'' बात ना मानी मेरो-२, होग्यो हिवड़ो चोरी रे,
बावली बणी मैं... ।। ४ ।।

*(तर्ज : मेरे पैरों मे घुंघरू...)*

मेरे बाबा का दर्शन करादे तो संग तेरे नाचता चलुं
मोहे खाटू नगर, मोहे खाटू नगरिया
दिखादे तो संग तेरे नाचता चलुं ।। टेर ।।

जब भी कोई खाटू जाये, मेरा जिया ललचाये,
बैठा सोचुं किस घड़ी जाने, मेरा बुलावा आये,
मुझको भी संग मे ले ले दिवाने,
मैं भी चलुगां उसको रिझाने-२,
कोई मेरी भी टिकट कटाले तो संग तेरे नाचता चलुं...।। १ ।।
मेरे खाटू वाले जैसा, दूजा नहीं कोई दानी,
लीले वाले सेठ का जग में, दूजा नही कोई सानी,
जिसने भी दरपे अरजी लगाई,
पलभर में इसने करली सुनाई-२,
कोई मेरी भी अरजी लगादे तो संग तेरे नाचता चलुं ...।। २ ।।
इसके जैसा सेठ जहाँ में, ढूँढ़े ना तुम पाओ,
खाली हाथों आ जाओ बस, झोली भर ले जाओ,
''हर्ष'' जमाना इसका दिवाना,
मै भी तो इसका सेवक पुराना-२,
कोई मेरा भी नम्बर लगा दे तो संग तेरे नाचता चलुं...।। ३ ।।





*(तर्ज : मोहब्बते लुटाऊँगा...)*

मैं तेरे दर आऊगां
मैं छेड़ के मीठी तान तान फिर गाऊगां
मैं श्याम धणी को मीठे भजन सुनाऊगां
इस चौखट से मैं खुशियाँ लूट ले जाऊगां
मै झोली भर ले जाऊगां ।। टेरे ।।

ग्यारस का बाबा मुझे रहता इंतजार है
तेरे दर्शनों के लिये जिया बेकरार है
बेटे को बाबा तुझपे पूरा ऐतबार है
मुझको भी होगा बाबा तेरा दीदार
सोच कर आऊगां, इस चौखट से मैं... ।। १ ।।

बड़ा ही दयालु मेरा श्याम सरकार है
अपने भगत का रहता इसे इंतजार है
बिना मांगे दे देता है बड़ा दिलदार है
झोलियां भरन को रहता सदा तैयार
श्याम गुण गाऊगां, इस चौखट से मैं... ।। २ ।।

## ( २ )

बेटा तुम्हारा हुँ मैं मुझे तुमसे प्यार है
मांगने का बाबा मुझे पूरा अधिकार है
''हर्ष'' हमारा दाता तू ही मददगार है
अब ना सुनुगां बाबा तुमसे इन्कार
मांग ले जाऊगां, इस चौखट से मैं... ।। ३ ।।

जो भजे मन से उसी पर ध्यान देता हूँ ।
थोड़ा सा तुम मांगते हो ज्यादा देता हूँ ।।

उठाई तूने नजर तो मेरा करार गया,
खुशी से दर्द से गम से मुझे उबार लिया ।
मेरा बिगड़ा नसीब था मगर ऐ दिलबर,
तुम्ही ने अपने हाथों से इसे संवार दिया ।।





*(तर्ज : मैं तेरे इश्क में...)*

मैं तुझे गर कहीं भूल जाऊँ कभी,
तु मुझे ना भुलाना मेरे सांवरे,
जो भटक ही गया राह में मैं कभी,
अपनी उंगली थमाना मेरे सांवरे ।। टेर ।।

मुझको तेरा ही है एक आसरा,
मेरा तेरे सिवा ना कोई दूसरा,
रूठना, ना कभी, तुमको मेरी कसम ।। १ ।।

तेरा मेरा ये रिश्ता है प्यार का,
मैं हूँ पागल दिवाना दीदार का,
हैं बुरे, साँवरे, देख मेरे करम ।। २ ।।

तुमसे बाँधी है जीवन की डोर ये,
मेरी भूलों पे करना ना गौर रे,
हो जरा, ''हर्ष'' पे, श्याम थोड़ी रहम ।। ३ ।।

*(तर्ज : छोटे छोटे शहरों से...)*

मैया तेरा ये लल्ला, खीचें साड़ी का पल्ला, मेरे पीछे ये बैरी पड़ा
हरदम मुझको छेड़े है, मेरी मटकी फोड़े है,
होके रस्ते में जुल्मी खड़ा, घड़ी घड़ी - घड़ी घड़ी मुझे सताये रे,
घड़ी घड़ी - घड़ी घड़ी, मुझे रुलाये रे ।। टेर ।।

रातों को मैं, सोती नही, चुपके से आये, लल्ला तेरा,
ग्वालो को ले, छीकें से ये, चोरी से खाये, माखन मेरा,
जग में हो जाये हल्ला, जाने सारा मोहल्ला,
हाँसे खिल खिल अटरिया चढ़ा ।। हरदम मुझको... ।।१।।

सिर पे मेरे, मटकी धरे, घर को चलुं मै, होले होले,
हाथों में ये, कंकर लिये, आगे-पीछे, डोले डोले,
मेरी गागरिया लल्ला, फोड़े माँ खुल्लम खुल्ला,
मेरा इससे तू पीछा छुड़ा ।। हरदम मुझको... ।।२।।

बेचन दही, जो मैं चली, राहों में रोका, ''हर्ष'' मुझे,
कैसे कहुँ, क्या क्या हुआ, कहने न पाऊँ, मैया तुझे,
देवे चान्दी का छल्ला, मुझको तेरा निठल्ला,
देता गालों में उगंली गड़ा ।। हरदम मुझको... ।।३।।





*(तर्ज : म्हारो बेड़ो पार...)*

म्हाने सालुंसाल बुला लीज्यो खाटू रा सरदार,
थारे चरणां माहीं बिठा लीज्यो खाटू रा सरदार ।। टेर ।।

फागण को मेलो आवे, जद थारी याद सतावे,
म्हाने मेले माहीं बुला लीज्यो खाटू रा सरदार ।। १ ।।

रिगंस सुं पैदल आवाँ, थारे शिखर ध्वजा फहरावाँ,
भगतां री आस पुरा दीज्यो खाटू रा सरदार ।। २ ।।

फागण में लखदातारी, थे माल लुटाओ भारी,
म्हारी झोली थे भरवा दीज्यो खाटू रा सरदार ।। ३ ।।

थारो ''हर्ष'' लगावे अरजी, आगे है थारी मरजी,
अरजी पर ध्यान लगा दीज्यो खाटू रा सरदार ।। ४ ।।

*(भांगड़ा)*

ये मेला खाटू का, आता है हर साल,
दिवाने बाबा के-२, करते खूब धमाल ।। टेर ।।

टोलियाँ बनाके सारे, श्याम के दिवाने देखो, हाथों में निशान लेके चलते,
ढ़ोल नगाड़े बाजे, होके मस्ताने देखो, उछल उछल सारे नचते,
रंग उड़ाये देखो, झूमे नाचे गाये, सारे मिलके करे है कमाल ।। १ ।।

बड़ा दिलवाला मेरा, श्याम खाटू वाला सारे, भगतों की झोलियों को भरता,
हारे को सहारा देवे, डूबे को किनारा देवे, दुखियों के दुखड़ों को हरता,
भरम मिटालो चाहे जाके आजमालो नही दूजी इसकी मिसाल ।। २ ।।

शीश का दानी है ये, बड़ा बलवानी है ये, दर पे जमाना सारा झुकता,
''हर्ष'' कहे रे जो ये, करके दिखादे वो तो, दूजा नही कोई कर सकता,
मेले में जो जाये जाके शीश झुकाये, वो तो हो जाता है निहाल ।। ३ ।।





*(तर्ज : लोंग गवाचा...)*

रंग बिरगें निशान उठाके, झूम झूम के नाचते गाते,
पैदल चल कर आयेगें, बाबा खाटू नगरिया,
बाबा मेरे श्याम, बाबा मेरे श्याम ।। टेर ।।

भांत भांत के निशान बनाके, श्याम नाम उन पर लिखवाके,
जय जयकार गुंजायेगें, बाबा खाटू नगरिया,
बाबा मेरे श्याम... ।। १ ।।

श्याम प्रभु का रथ सजवा कर, भगतों के टोले बनवाकर,
नाचते गाते आयेगें, बाबा खाटू नगरिया,
बाबा मेरे श्याम... ।। २।।

केशर चन्दन लेप बनाकर, माथे उपर तिलक लगाकर,
रंग गुलाल उड़ायेगें, बाबा खाटू नगरिया,
बाबा मेरे श्याम... ।। ३ ।।

लाल - गुलाबी नीले-पीले, ''हर्ष'' निशान ये रंग रंगीले,
मंदिर शिखर चढ़ायेगें, बाबा खाटू नगरिया,
बाबा मेरे श्याम... ।। ४ ।।

*(तर्ज : हाय हाय हाय मेरे रब्बा...)*

रंग बिरंगी लिये ध्वजायें खाटू पैदल जाये,
फागुन की मस्ती में सारे सेवक नाचे गाये,
अरे झूम झूम झूम झूम बाबा, दिवाने तेरे नाचने लगे-२ ।।

हाथों में निशान है, बाबा जी का ध्यान है,
सारे मिलके आज करे, बाबा का गुणगान है,
अरे झूम झूम... ।। १ ।।

फागुन की बहार है, रंगों की बोछार है,
मंदिर में बैठा सबको, देखे लखदातार है,
अरे झूम झूम... ।। २ ।।

कोई सरपट चाले है, कोई घूमर घाले है,
श्याम नाम की चादरिया, आज गले में डाले है,
अरे झूम झूम... ।। ३ ।।

बाबा की जैकार करे, रक्षा वो दातार करे,
''हर्ष'' कहे मेरा बाबा, सबके ही भण्डार भरे,
अरे झूम झूम... ।। ४ ।।





(तर्ज : थानेदार) रजनीश शर्मा

रहना इसका बणके रे, क्युँ गर्व करे तु तणके रे,
देख श्याम के-२, चरणों में ये दुनिया शीश झुकावे, रे...
खाटू का थानेदार सांवरा, बैठ्या भगतां पे हुकम चलावे,
खाटू का थानेदार सांवरा... ।। टेर ।।

देश ढुंढारा में चलती है ''इसकी नम्बरदारी रे''-२,
खाटू के मंदिर में बैठा ''कलयुग का अवतारी रे''-२,
बड़े बड़े सरदार श्याम के दरपे शीश नवावे, रे... ।। १ ।।

कितना ही चालाक हो कोई ''श्याम से ना बच पाये रे''-२,
गर्व करे जो इसके आगे ''उसकी अकड़ मिटाये रे''-२,
फण्ड करे तो उस पापी को नाको चने चबावे, रे... ।। २ ।।

दर्दी की फरियाद सुने है ''तु भी रपट लिखाना रे''-२,
''हर्ष'' खड़ा क्या सोचे प्यारे ''काहे का शरमाना रे''-२,
ये हारे का साथ निभाये सच्चा न्याय चुकावे, रे... ।। ३ ।।

*(राग रचयिता : प्रवीन बेदी....मो.९८३०४३२६६९)*

रातों में अक्सर कान्हा, तेरी याद मुझे तड़पाये,
इक टीस उठे सीने में मेरे, ये आँखे भर भर जाये ।। टेर ।।

दिल का सुकुन खो बैठा आँखो से भी निन्दिया,
साँवरिया तेरे प्यार ने पागल सा कर दिया,
जिस ओर निगाहें फेरूं बस तुही नजर आये ।। १ ।।

इक लौ सी जल उठी है सीने में श्याम की,
ये धड़कन प्यासी बाबा इक तेरे नाम की,
तेरी यादों मे ही मोहन ये वक्त गुजरता जाये ।। २ ।।

नजरें मिली नजरों से तो दिल हो गया उधर,
सम्मोहन सा कर डाला तुमने क्या जादूगर,
बिन सावन के ही बदली नैनों से झर-झर जाये ।। ३ ।।

दिवाना दिल ये हो गया माने ना कुछ कहना,
सेवा में तेरी साँवरे अब ''हर्ष'' को रहना,
तुझे छोड़ बतादे तुही तेरा दास किधर को जाये ।। ४ ।।





*(तर्ज : होलिया में उड़े रे...)*

राधे राणी चान्द को टुकड़ो, कान्हो है राजकुमार,
ईं जोड़ी को जवाब नहीं ।। टेर ।।

श्याम वरण को श्याम बिहारी,
गोरी गोरी राधा प्यारी,
लेओ जी निजरां उतार ।। १ ।।

राधा के बिन श्याम है आधो,
निर्मल पावन प्रेम हैं सांचो,
ज्युँ जमुना की धार ।। २ ।।

साँवलिये की मुरली बाजे,
बरसाणे की छोरी नाचे,
झूमे कदम की डाल ।। ३ ।।

''हर्ष'' श्याम संग राधे राणी,
ज्युँ ठाकुर के संग ठकुराणी,
दोन्यां को रूतबो अपार ।। ४ ।।

*(तर्ज : जाने ना नजर पहचाने जिगर)*

लागे ना नजर, ओ श्याम सुंदर,
क्या अदभुत रूप बनाया, मेरा रोम रोम हर्षाया ।। टेर ।।

अन्दाज ये तेरा न्यारा है, भगतों को लागे प्यारा है-२,
मै देख जिसे भरमा जाऊं ये कोन सा जाल बिछाया,
मेरा रोम रोम हर्षाया ।। १ ।।

नैनो के तीर चलाते हो, और बांकी अदा दिखलाते हो-२,
प्यारी चितवन में खो ही गया ये कैसा रोग लगाया,
मेरा रोम रोम हर्षाया ।। २।।

मै 'हर्ष' बलईयां वार ही दूं, आ तेरी नजर उतार ही दूं-२,
दीदार तुम्हारा ओ मोहन कितनो को आज लुभाया,
मेरा रोम-रोम हर्षाया ।।३।।





*(तर्ज : लागी रे लागी...)*

लाग्यो रे लाग्यो, कोई तीर कालजे लाग्यो,
तीर नजर को म्हां पर बैरी, फेंक साँवरो भाग्यो ।। टेर ।।

बेचण दही गई मैं मैया, यो कान्हुड़ो आग्यो,
आधे दही ने ढ़ोल दियो माँ-२, आधो जुलमी खाग्यो ।। १ ।।

मैं ठहरी नादान गूजरी, यो छलियो माँ बाँको,
होले सुं मुस्का के मेरी-२, आंख मैं देग्यो ताको ।। २ ।।

साँझ ढ़ले माँ घर मैं चाली, अंधियारो सो छाग्यो,
देख एकली हाथ मरोड़्यो-२, ऐने डर माँ क्याँको ।। ३ ।।

मैं सुत्यी थी नीन्द में मेरा, बाल कतर के भाग्यो,
'हर्ष' तेरो यो लालो म्हांपर-२, घोर जुलम माँ ढाग्यो ।। ४ ।।

*(तर्ज : होलिया में उड़े रे...)*

लाडो को मण्डयो है ब्याह धणी तेरी महर घणी,
होगी तेरी किरपा धणी तेरी महर घणी ।। टेर ।।

थारी दया सुं यो दिन आयो,
मनचायो वर लाडो पायो,
चोखा मिल्या है सगा ।। १ ।।

ब्याह को सैं पर रंग चढ़्यो है,
थेली पकड़्यां श्याम खड़्यो है,
खरचे की कोन्या परवाह ।। २ ।।

ब्याह की शोभा वरणी न जावे,
सेठ साँवरो हुकम चलावे,
आज नचीता म्हे हुया ।। ३ ।।

थारे चरणां शीश नवाकर,
''हर्ष'' श्याम थारो आशीष पाकर,
लाडो तो होसी जी विदा ।। ४ ।।





*(राग :क्या मिलिये ऐसे लोगों से)*

लूट रहे हो किसके दम पे रहमत भरा खजाना रे,
देने वाला कौन है क्या ये सोचा समझा जाना रे ।। टेर ।।

साँचे मन से नाम पुकारा छुमन्तर सब कष्ट हुए,
जाने या अनजाने भगतो पाप उसी के नष्ट हुए,
छोटा बड़ा कोई ना समझे किसी को ना बेगाना रे ।। १ ।।

नब्ज टटोले बिन दर्दी का पल में दर्द मिटा देता,
सुमिरन से हर रोग मिटाये ऐसा बैद कहाँ देखा,
रोगों से गर मुक्ति चाहो श्याम शरण में आना रे ।। २ ।।

हारे का जो बने सहारा कमजोरों का साथी है,
कलिकाल में सारी दुनिया गीत उसी के गाती है,
थक जाये जो ''हर्ष'' दुखो से उसका साथ निभाना रे ।। ३ ।।

*(धमाल) (उत्सव)*

लेकर मोरछड़ी हाथां में तेरा सेवक नाचे रे,
श्याम तेरे किर्तन में ढ़ोलक ढ़पली बाजे रे ।। टेर ।।

कार्तिक महीने सुं भगतां को चोखो जमघट लागे रे,
श्याम तेरे मेले तक सगला, रात्युँ जागे रे ।। १ ।।

ज्युँ ज्युँ फागण नेड़े आवे रंग तेरो परवान चढ़े,
श्याम नाम का चंग मजीरा, घर घर बाजे रे ।। २ ।।

''हर्ष'' कहवे फुलां रो तेरो सोणो सो सिणगार सजे
श्याम तेरो दरबार बड़ो ही, प्यारो लागो रे । ३ ।।





*(जनम दिन)*

*(राग रचयिता : राजू मेहरा मो॰ ९४३३०८०१७८)*

लो आज आया रे जनम दिन बाबा का
ढ़ोल ढ़फली बजाओ, झूमो नाचो और गाओ
देखो खुशियाँ लाया रे, जनम दिन बाबा का ।। टेर ।।

सांवरा सलोना मेरा लीले चढ़ आयेगा,
घर मेरे आके मेरा मान बढ़ायेगा,
उल्लास लाया रे जनम दिन बाबा का... ।। १ ।।

आज खुशी से सारे भंगड़ा पायेगें,
सांवरे के चरणों मे हम बिछ जायेगें,
मुझे आज भाया रे जनम दिन बाबा का... ।। २ ।।

दुखियों का साथी आया दीनों का सहारा,
नैन बिछाये बैठा देखो जग सारा,
उच्छाव छाया रे जनम दिन बाबा का... ।। ३ ।।

''हर्ष'' दिवाना देखो बाँटे रे बधाई,
खुशियों से नाचे सारे लोग लुगाई,
मुझे रास आया रे जनम दिन बाबा का... ।। ४ ।।

*(तर्ज : भढिण्डे वाली रेल) रजनीश शर्मा*

लो भगतो अब आ गया मौका-२, मौका है ये बड़ा अनोखा,
घड़ी सुहानी आई जी-२, चाल सांवरे सेठ के
अट्ठारह डब्बे लगे, जी खाटू वाली रेल में ।।

कोरस :*मालामाल हो गया, क्या कमाल हो गया,*
*तेरा आया है बुलावा तु निहाल हो गया ।।*

गूंज रहा है जै जै कारा-२, श्याम दिवाना है जग सारा,
आके सेवक शामिल हो जा तु भी रेलम पेल में ।।१।।

सारे जग में धूम मची है-२, खाटू नगरी खूब सजी है,
गलियों में कोई नाच रहा है कोई चढ़ा मुण्डेर पे ।।२।।

रंग रंगीला मेला आया -२, श्याम धणी का हेला आया,
''हर्ष'' दिवानों खाटू चालो बैठ श्याम की रेल में ।।३।।





*(तर्ज : अंजनी का लाला नाचे रे...)*

लीला रंगीला नाचे रे, देखो
लीला रंगीला नाचे रे ।। टेर ।।

हिन हिन करता नाच दिखाये,
श्याम धणी को आज रिझाये,
साज सुरीले बाजे रे ।। १ ।।

खन-खन-खन घुंघरू खनखाये,
मंद मंद बाबा मुस्काये,
भगतों को प्यारा लागे रे ।। २ ।।

श्याम मगन हो सुध बिसराई,
श्याम नाम की मस्ती है छाई,
पैरों की टाप बाजे रे ।। ३ ।।

''हर्ष'' भगत तेरी लेवे बलाई,
प्यारी छवि मेरे दिल में समाई,
भगतों के भाग्य जागे रे ।। ४ ।।

*(तर्ज : सज रही गली मेरी माँ..)*

लीला घोड़ा भगतां ने, तू श्याम सूं मिलादे
श्याम सूं मिलादे, घनश्याम सूं मिलादे ।। टेर ।।

राम जाणे वो दिन, कद आवेलो,
म्हारो बाबो दरशण, दे जावेलो,
कालजे में हूक सी उठे ।। तू श्याम सूं मिलादे ... ।।

भोत गया इब, थोड़ा दिन बाकी,
सांवरे ने डीकां, जाणे कद आसी,
थोड़ी सी रहम कर दे ।। तू श्याम सूं मिलादे ...।।

नैणा बिछाके म्हे तो, आस लगाई,
घोड़लिया तने, बाबा की दुहाई,
थोड़ो सो जतन कर दे ।। तू श्याम सूं मिलादे ... ।।

तेरे बिन लीला, बाबो कोनी हाले,
तूं चाले जद, बाबो म्हारो चाले,
''हर्ष'' को मन तरसे ।। तू श्याम सूं मिलादे ... ।।





*(राग रचयिता : प्रवीन बेदी....मो.९८३०४३२६६९)*

वृन्दावन में बजे मुरलिया मेरे मोहन श्याम की
लेकिन गूँज सुनी है हमने राधे तेरे नाम की
राधे-राधे-२ ।। टेर ।।

वंशीवट की डाली-डाली श्याम नाम रस घोले है,
वृन्दावन का पत्ता-पत्ता राधे राधे बोले है,
राधे - राधे-२... ।। १ ।।

जै जै कार बिहारी तेरी मंदिर में सब लोग करे,
लेकिन राधे तेरी पूजा घर घर में हर रोज करे,
राधे - राधे-२... ।। २ ।।

वृन्दावन का श्याम सलोना बरसाने की राधिका,
राधा का वो दिवाना है श्याम की वो आराधिका,
राधे - राधे-२... ।। ३ ।।

ऐसा क्या है तुझमें राधे ''हर्ष'' समझ ना पाये रे,
तीन लोक का साँवरिया भी तेरे ही गुण गाये रे,
राधे - राधे-२... ।। ४ ।।

*(तर्ज : थारे झाँझ नगाड़ा)*

सखियाँ रंग अबीर उड़ावे रे,
कुँज गली में कुवँर कन्हैयो रास रचावे रे ।। टेर ।।

कालो कालो साँवरो और पीली पीली पाग,
गोरी गोरी राधिका ने श्याम खिलावे फाग,
सखियाँ मंद-मंद मुस्कावे रे ।। १ ।।

आगे आगे राधिका और पीछे पीछे श्याम,
बरसाणे की बाँकुरी को कान्हो बण्यो गुलाम,
गूजरी मतना घणो सतावे रे ।। २ ।।

होंठ लगाई बाँसुरी तो ठहर गयो बृजधाम,
थिरकण लागी बावरी जद मुस्कायो घनश्याम,
कान्हो मुरली मधुर बजावे रे ।। ३ ।।

कान्हो बोल्यो छोड़ दे नखरा होली खेल ओ गोरी,
''हर्ष'' प्रेम सूं गाल रंगाले होवे ली बरजोरी,
कान्हो राधा ने समझावे रे ।। ४ ।।





*(तर्ज : सबके रहते लगता है जैसे...)*

सबसे सच्चा, सबसे अच्छा, ''साथी तु ही है मेरा''-२
जीवन की काली रातो में, आया बनके सबेरा ।। टेर ।।

मेरे अपनों ने दी ठोकर, तूही बना है सहारा,
मेरी नैया डूब रही थी, तुमने दिया किनारा,
खाटू वाले दास का तूने-२, मेट दिया है अन्धेरा ।। १ ।।

झूठा हर रिश्ता जहाँ का, साचाँ है प्यार तुम्हारा,
तेरी किरपा से है चलता, हम दीनों का गुजारा,
दुनिया रूठे श्याम न छूटे-२, साथ कभी ये तेरा ।। २ ।।

मैं तो हूँ गलती का पुतला, पर हूँ दास तुम्हारा,
सिर पे मेरे नाथ सदा युँ, रखना हाथ तुम्हारा,
''हर्ष'' कभी ना भूल सकेगा-२, बाबा अहसाँ तेरा ।। ३ ।।

*(तर्ज : लग जा गले...)*

सरकार के चरणों में जो सर को झुकायेगा,
दीनों का नाथ सांवरा उसका हो जायेगा ।। टेर ।।

कितनों की मेरे श्याम ने बिगड़ी बनाई है,
पल में ये अपने दास की करता सुनाई है,
दातार को जाकर के जो दुखड़े सुनायेगा ।।१।।

हारे हुए के साथ है दुखियों का नाथ है,
सर पे हमारे हर घड़ी इसका ही हाथ है,
दिलदार की मस्ती में जो सुध को भुलायेगा ।।२।।

कहने की बात है नहीं जाकर तु देखले,
चौखट पे मेरे श्याम के झुक कर तु देख ले,
बस प्यार से ऐ ''हर्ष'' तु इसको रिझायेगा ।।३।।





*(तर्ज : रंग और नूर की बारात...)*

सांवरे दिल का मेरे हाल तुझे कैसे कहूं,
मैं तुम्हारा हूं यही बात तुझे कैसे कहूं ।। टेर ।।

मैंने हर वक्त बसाया है तुझे दिल में मेरे,
मेरे सरकार चला आया हूं मैं दर पे तेरे,
दिल में उठते हुए जज्बात तुझे कैसे कहूं ।। १ ।।

ओ मेरे श्याम चला आया रिझाने तुझको,
कबसे रुठे हुए सरदार मनाने तुझको,
इतना कहदे तेरी अरदाश भला कैसे करूं ।। २ ।।

लीले घोड़े की पद-चाप सुनादे इकबर,
मेरी आंखो को तेरा अक्स दिखादे इकबर,
तुझसे मिलने के ख्यालात तुझे कैसे कहूं ।। ३ ।।

हर कोई कहता है छलिये पे उसी का हक है,
जो तुझे ध्याये तुझी पर तो उसी का हक है,
अपनी चाहत का बयां ''हर्ष'' तुझे कैसे करूँ ।। ४ ।।

*(राग रचयिता : राजेश चतुर्वेदी)*

सुन बाबा तेरा लाल आया है,
तुझको सुनाने दिल का हाल आया है ।। टेर ।।

मुझको अकेला दुनिया ने पाया,
कैसे बताऊँ कितना रूलाया,
जग का सताया तेरा लाल आया है ।। १ ।।

आजा दयालु मुझको सम्भालो,
अपनी शरण में मुझको बिठालो,
सीने मे गम का भूचाल लाया है ।। २ ।।

पलकें उठाकर मुझको निहारो,
दुखड़ो से बाबा मुझको उबारो,
''हर्ष'' कलेजा निकाल लाया है ।। ३ ।।





*(तर्ज : राधा की पायल छम-छम बाजे...)*

सेठ श्याम ने गठरी खोली, श्याम दिवानों भरलो झोली,
लूटो लुटाये बाबा श्याम, देखो रे देखो धन बरसे ।। टेर ।।

चान्दी सोना खन खन खनके,
हीरे पन्ने दन दन बरसे,
धन का पिटारा लाये श्याम ।। १ ।।

ग्यारस की ये रात है प्यारी,
धन बरसाये श्याम बिहारी,
भरी है झोलियाँ तमाम ।। २ ।।

किर्तन में श्री श्याम पधारे,
भगतों के हुए वारे न्यारे,
बिगड़े बनेगें सारे काम ।। ३ ।।

लूट लो जितना लूटना चाहो,
''हर्ष'' श्याम की किरपा पाओ,
ये है दिवानों का ईनाम ।। ४ ।।

*(तर्ज : आज मेरे यार की शादी...)*

श्याम अब आन पधारो जी-२,
हो ऽऽऽ, नजर दया की दीन दयालु हमपे डारो जी ।।

तेरे स्वागत की बेला, लगा भगतों का मेला,
सजा दरबार निराला, तु आजा खाटू वाला,
हो ऽऽऽ, अपना दर्श दिखाके हमको भव से तारो जी ।। १ ।।

बड़ा ही पावन मौका, सजा सिंगार अनोखा,
सजे सावन के झूले, भला क्युँ हमको भूले,
हो ऽऽऽ, हुई अगर कोई भूल जो हमसे भूल सुधारो जी ।। २ ।।

बगीची श्याम बाटिका, लगे दरबार साँवरा,
सोने चान्दी से जकड़ी, सजी हीरों से पगड़ी,
हो ऽऽऽ, इतंजार की इन घड़ियों को आके टारो जी ।। ३ ।।

सुनी जो अर्ज हमारी, लो आये श्याम बिहारी,
बैठ कर ऊँचे आसन, करे भगतों पे शासन,
हो ऽऽऽ, ''हर्ष'' कहे इनके स्वागत में तन मन वारो जी ।। ४ ।।





*(तर्ज : दिल के अरमा आंसुओं...)(गायक भक्तों को समर्पित)*

श्याम के भगतों से प्यारे प्यार कर,
भजनों की गंगा को उजला और कर ।। टेर ।।

इनका क्या है जो दिया प्रभु ने दिया,
कंठ में इनके शहद सा भर दिया,
रात-दिन किर्तन करे घर भूल कर ।। श्याम के... ।। १ ।।

क्यूं भला कुछ लोग इनको कोसते,
इनके भी परिवार है ना सोचते,
खा रहे सारे प्रभु से मांग कर ।। श्याम के... ।। २ ।।

भजनों से सबकी तिजोरी ये भरे,
श्याम की नजरों में ऊंचा ये चढ़े,
पुण्य की गठरी चले सिर बांध कर ।। श्याम के... ।। ३ ।।

इन सा भागी इस जगत में है कहाँ,
जहां लगे दरबार रहते ये वहाँ,
'हर्ष' कान्हा इनका तू कल्याण कर ।। श्याम के... ।। ४ ।।

*(तर्ज : ऐसे ना कन्हैया शर्माया करो...)*

श्याम की सुरा दिनरात पिये जा,
श्याम का नशा दिनरात किये जा ।। टेर ।।

शाम की सुबह तक उतर जायेगी,
श्याम से उमरिया गुजर जायेगी,
खुद भी पियेजा प्यारे औरों को पिला,
श्याम का नशा दिनरात किये जा ।। १ ।।

पीने वाले पीकर बहक जाते हैं,
श्याम की जो पिये वो महक जाते हैं,
खुद भी महक प्यारे औरों को महका,
श्याम का नशा दिनरात किये जा ।। २ ।।

सारे नशे जग से जुदा करेगें,
श्याम के नशे से ''हर्ष'' श्याम मिलेंगे,
छोड़ो सारे नशे करो श्याम का नशा,
श्याम की सुरा दिन रात पिये जा ।। ३ ।।





*(तर्ज : जाने वाले इक संदेशा...)*

श्याम दिवानों एक योजना मिलके आज चलाओ तुम,
भगतों के घर श्याम नाम का गुल्लक एक रखाओ तुम ।।

आओ ये संकल्प करें हम इतना तो कर पायेगें,
एक रूपया रोज बचा कर उस गुल्लक मे डालेगें,
अपने गली मोहल्ले में अब श्याम नाम गुंजाओ तुम ।। १ ।।

एक बरस के पीछे घर में गुल्लक एक नया लाना,
भरे हुए गुल्लक को प्यारे नेक काम में लगवाना,
श्याम नाम का हर कोने में डंका आज बजाओ तुम ।। २ ।।

तिनका तिनका मिल जाये तो एक घोंसला बनता है,
देख एक को औरों का भी ''हर्ष'' होंसला बढ़ता है,
नई योजना का भगतों को प्यारे ज्ञान कराओ तुम ।। ३ ।।

*(तर्ज : कसमे वादे प्यार वफा...)*

श्याम धणी थारी शरण पड़यो हुँ चरणा माहीं बिठा लीज्यो,
बेटे रे गलती ने बाबा दिल सुं आप भुला दीज्यो ।। टेर ।।

मैं टाबर नादान हूँ थारो भूल चूक करतो आयो,
ऊँच नीच तो मैं नही जाणु मनचाही करतो आयो,
भले बुरे को थे म्हारा मायत म्हाने ज्ञान करा दीज्यो ।। १ ।।

म्हारो म्हारो करतो रहग्यो थारो ना बण पायो जी,
मोह माया में फँसकर बाबा थाने ना भज पायो जी,
रोम रोम में थारे नाम की, पावन ज्योत जगा दीज्यो ।। २ ।।

''हर्ष'' डरुँ ना जग सुं बाबा, पण थारे सुं डर लागे,
कान पकड़ उठ बैठ करात्यो, चाहो तो थारे आगे,
बेटे की करणी ने बाबा, मन सुं थे बिसरा दीज्यो ।। ३ ।।





*(तर्ज - इंजन की सीटी...)*

श्याम धणी के किर्तन मांही सेवक नाचे,
बाजे बाजे जी-२, ढोलक ढफ चंग बाजे ।। टेर ।।

खाटू हालो सेठ साँवरों भगता के घर आयो,
सुत्योड़ी तकदीर जगाई म्हारो मान बढ़ायो,
नाचे नाचे जी-२, सेवक छमा छम नाचे ।। १ ।।

बाबा को सिगांर सुहाणो भोत घणो है प्यारो,
मोर मुकुट केशरिया बागो हार गले में न्यारो,
साजे साजे जी-२, हाथां में बाजुबंद साजे ।। २ ।।

हिन हिन करतो लीलो घोड़ो बाबा का गुण गावे,
''हर्ष'' भगत श्रृद्धा से थारे चरणा शीश झुकावे,
लागे लागे जी-२, सलूणो म्हाने श्याम लागे ।। ३ ।।

*(तर्ज : लम्बी जुदाई ...)*

दोहा - बिछड़े कभी ना हम, बस यही अरमां ।
सहुँगी मैं कैसे, इंतजार का सदमा ।।

श्याम ना आये, मेरी याद भुलाये हाय, कितना सताये,
श्याम सलोने, दरश दिखा मोहे ''काहे रुलाये'' -२
राधा बुलाये, छलिया, ना आये हाय, कितना सताये,
श्याम सलोने, दरश दिखा मोहे, ''काहे रुलाये''-२ ।।

तुझको दिवानी तेरी, याद करे रे,
तुझसे मिलन की फरियाद करे रे -२,
जियरा को तूही आके-२, धीर बंधाये हाय, कितना सताये,
श्याम सलोने ... ।। १ ।।

आजा जिया मोरा-२, मिलने को तरसे,
श्याम पिया तोरे, दर्शन को तरसे-२,
दिल के झरोखे में है-२, श्याम समाये हाय, कितना सताये,
श्याम सलोने .... ।। २ ।।

प्रीत हुई है बैरन, ओ हरजाई,
जुल्मी से ''हर्ष'' काहे, नेहा लगाई-२,
सांवरे सजन आजा -२, विरहा सताये हाय, कितना सताये,
श्याम सलोने .... ।। ३ ।।





*(तर्ज : कान में झुमका....)*

श्याम नाम का भगतों मैंने जबसे पढ़ा पहाड़ा,
एक और एक तो दो होते हैं,
लेकिन बन गये ग्यारह, देखो
देखो जी देखो क्या कमाल हो गया,
पढ़के पहाड़ा मालामाल हो गया ।। टेर ।।

अरे बावरे, क्युँ फिरे मारा मारा,
इसी की दया से चले है गुजारा,
श्याम नाम की रटन लगी तो हो गये रे पौ बारह,
एक और एक... ।। १ ।।

जरा प्रेम से, ढ़ाई अक्षर उचारो,
प्रभु की दया से ये जीवन संवारो,
इसी पहाड़े से किस्मत का रोशन हुआ सितारा,
एक और एक... ।। २ ।।

मेरे श्याम का, जो पहाड़ा पढ़ेगा,
हमेशा वो जीवन में मौज करेगा,
''हर्ष'' भगत लाखों में खेले पढ़के यही पहाड़ा,
एक और एक... ।। ३ ।।

*(तर्ज : चाँद सी मेहबूबा हो मेरी...)*

श्याम सलोना सुन्दर होगा, इतना मैने सोचा था,
पर तू उससे बढ़कर निकला, जितना मैने सोचा था ।। टेर ।।

ये चितवन भोली भाली है, ये आँखे दो मतवाली है,
कानों मे प्यारे कुण्डल है, ''होठों पे सोहे लाली है''-२
प्यारा सा रूप तुम्हारा होगा, इतना मैने सोचा था... ।। १ ।।

बाहों पे बाजु बंध सोहे, पैरो में पैजनिया बाजे है,
ये चंदन टीका माथे पर, ''हाथों में मुरलिया साजे है''-२,
किरणों सा तेज तुम्हारा होगा, इतना मैने सोचा था...।। २।।

ऐ श्याम सलोनी सूरत है, तु सुन्दरता की मूरत है,
ये 'हर्ष' तुम्हारा हो ही चुका ''ना और किसी की जरूरत है''-२,
चान्द सी शीतल चितवन होगी, इतना मैंने सोचा था...।। ३ ।।





*(तर्ज : लाल दुपट्टा उड़ गया रे...)*

श्याम सलोना-२ आ गया रे देखो बड़े ही मौके से,
इक पल भी वो रूक ना पाया किसी के रोके से,
दयालु मेरा ध्यान रखता है, भगत का मान रखता है ।।

आस लगाये बैठा था मैं तो श्याम के आने की
घर में आकर बोला बालक बात नही घबराने की
मैं समझ ना पाऊँ, ओ कान्हा
तुझे कहाँ बिठाऊँ, ओ कान्हा
ये तेरा लीला बाते करता हवा के झोंके से... ।। १ ।।

महक उठा दरबार ये इत्तर की फुहार से
आओ लाड लडायें हम सांवलिये सरकार के
जो प्रेम दिखाये, आ जाता,
जो भोग लगाये, खा जाता,
भाव का भूखा रह नहीं पाये किसी के टोके से... ।। २ ।।

## ( २ )

जब जब याद किया मैने पलमे दौड़ा आया है,
''हर्ष'' मेरे आँसु पोंछे, मुझको गले लगाया है,
मेरी लाज बचाये, ये कान्हा,
मेरे कष्ट मिटाये, ये कान्हा,
जब जब मेरे चैन को लूटा जग ने धोखे से... ।। ३ ।।

मन लगा श्रद्धा दिखा मैं दौड़ा आऊँगा ।
''हर्ष'' तेरा साथ मैं हर पल निभाऊँगा ।।

ये मायत हम बच्चे हैं, दुख सहने में कच्चे हैं,
समझे जो दिल की बातें, रोना बस उसके आगे ।
दौलत से नी रीझेगा, आँसू से ही पसीजेगा,
''हर्ष''तू दर पे शीश झुका, आँसू की सौगात चढ़ा ।।





*(तर्ज : जलती रहे खाटू वाले ज्योत तेरी...)*

शंख बजे शहनाई, श्याम तेरे मंदिर में ।। टेर ।।

भोर भये तेरे मंगला होवे-२,
जय जय कार गुंजाई, श्याम तेरे मंदिर में ।। १ ।।

फिर होवे श्रृंगार आरती-२,
नाचे लोग लुगाई, श्याम तेरे मंदिर में ।। २ ।।

दोपहरी में होवे भोग आरती-२,
बंटते मेवे मिठाई, श्याम तेरे मंदिर में ।। ३ ।।

गोधुली में तेरी सायँ आरती-२,
बहुत बड़ी सकलाई, श्याम तेरे मंदिर में ।। ४ ।।

''हर्ष'' निराली तेरी शयन आरती-२,
भगतों की भीड़ समाई, श्याम तेरे मंदिर में ।। ५ ।।

*(तर्ज : हमसफर मेरे हमसफर...)*

हाथो में तेरे कन्हैया सौंप दी पतवार है,
थामे जो तू जीत मेरी छोड़े तो तेरी हार है ।। टेर ।।

थक गया हूँ नाव खेते और ना खे पाऊंगा,
तु बने माझी अगर तो भव से मैं तर जाऊंगा,
एक तेरा आसरा है तेरा ही आधार है ।। १ ।।

श्रृद्धा और विश्वास की ये डोर सौंपी है तुझे,
अब ना कोई डर किसी का ना कोई चिंता मुझे,
जो भी तेरा फैसला है अब मुझे स्वीकार है ।। २ ।।

हार कर तुझको पुकारा अब भला क्या हार है,
जीत देने वाले तुझपे ''हर्ष'' को ऐतबार है,
लीले वाले श्याम तेरी अब तुझे दरकार है ।। ३ ।।





*(राग रचयिता : प्रवीन बेदी....मो.९८३०४३२६६९)*

हो सकता किस्मत खुल जाये, हाँ हाँ ये हो सकता है,
लीले वाला खुद आ जाये, हाँ हाँ ये हो सकता है,
भगतों से वो आँख चुराये, ना ना ये हो नहीं सकता ।। टेर ।।

मन से इसको जो भी आज पुकारेगा,
नंगे पैरों मेरा श्याम पधारेगा,
हो सकता वो पल मे आये, हाँ हाँ ये हो सकता है,
आके बिगड़े काम बनाये, हाँ हाँ ये हो सकता है,
ये भी हो वो देर लगाये, ना ना ये हो नहीं... ।। १ ।।

लाज बचाने श्याम सलोना आया था,
बहना का आकर के चीर बढ़ाया था,
हो सकता वो अब आ जाये, हाँ हाँ ये हो सकता है,
आके सबकी लाज बचाये, हाँ हाँ ये हो सकता है,
ये भी हो वो कभी न आये, ना ना ये हो नहीं... ।। २ ।।

'हर्ष' बिदुर की कुटिया को महकाया था,
केले के छिलकों को प्रेम से खाया था,
हो सकता घर तेरे आये, हाँ हाँ ये हो सकता है,
रुखा सूखा वो खा जाये, हाँ हाँ ये हो सकता है,
ये भी हो वो मुँह बिचकाये, ना ना ये हो नहीं... ।। ३ ।।

ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे ।
खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे ।। ॐ जय।।

रतन जड़ित सिंहासन, सिर पर चंवर ढुरे ।
तन केशरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ।। ॐ जय ।।

गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे ।
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जले ।। ॐ जय ।।

मोदक खीर चूरमा, सुवरण थाल भरे ।
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ।। ॐ जय ।।

झांझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरै ।
भक्त आरती गावे, जय-जय कार करे ।। ॐ जय ।।

जो ध्यावे फल पावे, सब दुख से उबरे ।
सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम-श्याम उचरे ।। ॐजय ।।

श्री श्याम बिहारी जी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत 'आलूसिंह' स्वामी, मनवाछिंत फल पावे ।। ॐ जय ।।

जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे ।
निज भक्तों के तुमने, पूरण काम करे ।। ॐ जय ।।





आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ।।

जाके बल से गिरिवर कांपे, रोग दोष जाके निकट न झांके ।

अञ्जनी पुत्र महा बलदाई, सन्तन के प्रभु सदा सहाई ।

दे बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाये ।

लंका सो कोट समुद्र सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई ।

लंका जारि असुर संहारे, सियारामजी के काज सँवारे ।

लक्ष्मण मूर्छित पड़े धरनी पर, आन संजीवन प्राण उबारे ।

पैठी पाताल तोरी यम कारे, अहिरावण की भुजा उखारे ।

बाएँ भुजा असुर दल मारे, दाहिने भुजा संत जन तारे ।

सुरनर मुनि जन आरती उतारे, जै जै जै हनुमानजी उचारे ।

कञ्चन थार कपूर लौ छाई, आरती करत अञ्जना माई ।

जो हनुमानजी की आरती गावे, बसि बैकुण्ठ अमर पद पावे ।

लंक विध्वंस किये रघुराई, तुलसी दास स्वामी कीरति गाई ।